डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान

- डॉ राजीव अग्रवाल
- सुनील कुमार
- प्रज्ञा

डॉ अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान

डॉ राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर - शिक्षा संकाय
अतर्रा पी० जी० कॉलेज ,अतर्रा (बांदा)

सुनील कुमार

एम० ए० (हिंदी), एम० एड०

प्रज्ञा

एम०एस-सी० (गणित) , एम० एड०

डॉ अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान

डॉ राजीव अग्रवाल
सुनील कुमार
प्रज्ञा

E-बुक संस्करण 2025
मूल्य: ₹69

ISBN 978-93-342-6499-9

प्रकाशक
प्रज्ञा
मौदहा(हमीरपुर) 210 507
मोबाइल नंबर 8303 117810
ईमेल pragyap339@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हों। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिंतन-प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्मांड की परिधि को लाँघा है, वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनंददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है और यह भी सच है कि मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा-प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे इस योग्य बनाती है, जिससे वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बना पाता है। वास्तव में, शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य जीवन के सभी मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक शीर्षक प्रोफेसर (डॉ) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान है प्रस्तुत पुस्तक को पांच अध्याय में विभाजित किया गया है

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'अध्ययन परिचय' है, जिसके अंतर्गत वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की समस्याएँ, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से 'संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण' किया गया है, जिसके अंतर्गत शैक्षिक विचारधारा से संबंधित कतिपय शोध-अध्ययनों की समीक्षाएँ एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के बाल्यजीवन का परिचय, वंश-परंपरा, अध्ययन-यात्रा, अध्यापन-यात्रा तथा शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान के विभिन्न पहलुओं का सविस्तार वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'साहित्य सर्जना' में प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी की प्रकाशित पुस्तकों और प्रकाशित कविताओं का वर्णन बानगी के तौर पर किया गया है।

पंचम अध्याय 'निष्कर्ष एवं सुझाव' में संपूर्ण शोध से संबंधित निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब

तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।
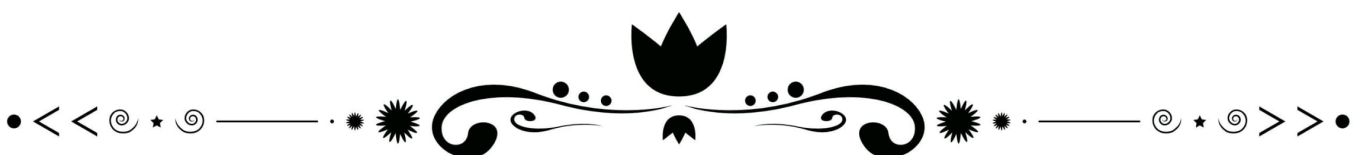
प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

12/05/2025

डॉ राजीव अग्रवाल
सुनील कुमार
प्रज्ञा

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	**अध्ययन परिचय**	**1-10**
1.1	शिक्षा: विकास की प्रक्रिया	
1.2	वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ	
1.2.1	शिक्षा का व्यवसायीकरण	
1.2.2	शिक्षा का राजनीतिकरण	
1.2.3	शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के लिए पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार	
1.2.4	शिक्षा की उपेक्षा	
1.2.5	भारतीय संस्कृति की उपेक्षा	
1.2.6	योग्य शिक्षकों का अभाव	
1.3	समस्या का प्रादुर्भाव	
1.4	समस्या कथन	
1.5	अध्ययन के उद्देश्य	
1.6	शोध विधि	
1.6.1	वर्णनात्मक अध्ययन	
1.6.2	केस अध्ययन विधि	
1.7	अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता	
द्वितीय अध्याय	**सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण**	**11-21**
2.1	प्रस्तावना	
2.2	शैक्षिक योगदान से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन	
2.3	समीक्षात्मक निष्कर्ष	
तृतीय अध्याय	**व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	**22-53**
3.1	बाल्य जीवन	
3.2	वंश परंपरा	
3.3	अध्ययन यात्रा	
3.4	गृहस्थ जीवन	
3.5	सेवायोजन यात्रा	
3.5.1	भारतीय वायुसेना जीवन	
3.5.2	उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पदार्पण	
3.5.3	विभागाध्यक्ष का उत्तरदायित्व	
3.6	सम्मान/पुरस्कार	
3.7	साहित्यिक सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान	
3.7.1	सम्मेलन/सभाएँ	
3.7.2	राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ	
3.8	हिन्दी प्रचार-प्रसार समिति में योगदान	
3.9	कार्यशालाएँ	

3.10 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में आमंत्रित व्याख्यान
3.11 आकाशवाणी से जुड़ाव
3.12 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के शैक्षिक विचार
3.12.1 आदर्श शिक्षा
3.12.2 सुसंस्कारों की शिक्षा
3.12.3 जन-जन को शिक्षा
3.12.4 व्यक्तित्व का विकास
3.12.5 कर्तव्यों की शिक्षा
3.12.6 कर्म की शिक्षा
3.12.7 स्त्री शिक्षा
3.12.8 अनिवार्य योग शिक्षा
3.13 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के द्वारा संपादित पत्रिकाएँ
3.14 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के व्यक्तित्व की विशेषताएँ
3.15 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के साहित्य की विशेषताएँ
3.16 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी एवं उनके साहित्य के संबंध में अन्य विद्वानों की सम्मतियाँ
3.16.1 डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री
3.16.2 कीर्तिशेष प्रोफेसर (डॉ.) यतीन्द्रनाथ तिवारी

चतुर्थ अध्याय **साहित्य सर्जना** **54-73**

4.1 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी की प्रकाशित पुस्तकें
4.1.1 समीक्षा की धार
4.1.2 पाठालोचन
4.1.3 अलबेले इक्कीस
4.2 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी की चुनिंदा प्रकाशित कविताएँ
4.2.1 शाम
4.2.2 होली
4.2.3 गुलाब
4.2.4 अवसाद से वसंत तक
4.2.5 सूखा पड़ गया
4.2.6 मां की याद
4.2.7 दादा जी
4.2.8 दीपावली
4.2.9 घर–उपवन
4.2.10 मानव
4.2.11 गति
4.2.12 सुबह

पंचम अध्याय		निष्कर्ष एवं सुझाव	74-79
	5.1	निष्कर्ष	
	5.2	शैक्षिक निहितार्थ	
	5.3	अध्ययन के सुझाव	
	5.4	शैक्षिक उपादेयता	
	5.5	भावी शोध हेतु सुझाव	
❖ संदर्भ-ग्रंथ-सूची			80-98
❖ परिशिष्ट			
	(I)	प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के जीवन की चुनिंदा झाँकियाँ	
	(II)	समाचारपत्रों में उपस्थिति की एक झलक	
	(III)	प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के साथ शोधार्थी चित्रावली	
	(IV)	शोधार्थी का जीवनवृत्त	

प्रथम अध्याय
अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: एक विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ज्ञान, तकनीकी दक्षता उचित आचरण, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक और बुद्धि के उत्कर्ष पर केंद्रित है। शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा, शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है, जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष्' का अर्थ है–सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ–सीखने-सिखाने की क्रिया। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं, तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है–व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में; व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण-प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप में होता है। यही सीखना-सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थान (विद्यालय, महाविद्यालय आदि) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक

सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शिक्षा को विकास की एक प्रक्रिया माना जाता है। प्रक्रिया का अर्थ है–एक विशेष प्रकार की क्रिया, जिससे मानव में कुछ विशेषताएँ आ जाती हैं। मानव कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ इस संसार में आता है। इन जन्मजात शक्तियों के साथ मानव को कुछ बाहरी (भौतिक और सामाजिक) शक्तियाँ भी प्राप्त होती हैं। मानव की इन जन्मजात व बाहरी शक्तियों में क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है, यही क्रिया-प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया है। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ के अनुसार शिक्षा मानव की आंतरिक शक्तियों का विकास करने की प्रक्रिया है। मानव में जो जन्मजात आंतरिक शक्ति विद्यमान होती है। उनका विकास वातावरण के संपर्क में आने से होता है। मानव अपने विकास के लिए जन्म से प्राप्त शक्तियों और भौतिक व सामाजिक शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु क्रिया-प्रतिक्रिया करता रहता है। इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप मानव ज्ञान व अनुभव प्राप्त करता है तथा सीखता है। शिक्षण (Teaching) शिक्षा का मुख्य अंग है। कोई भी शिक्षक या शिक्षिका किसी भी शिक्षार्थी को ज्ञान और उपयोगी कौशलों का उपदेश देते हैं। अध्ययन (Learning) के द्वारा कोई भी शिक्षार्थी उपयोगी ज्ञान और कौशल को प्राप्त करता है, जिसमें उनका मार्गदर्शन किसी शिक्षक या शिक्षिका के द्वारा किया जाता है।

शिक्षा के विकास के क्रम में इसके विभिन्न आयामों में 'आत्मानुशासन', 'पूर्णता की प्राप्ति', 'अच्छे आचरण और नैतिक चरित्र का विकास', 'मानवीय आत्मा का पोषण', 'जीवन-मूल्यों की प्राप्ति', 'मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास', 'संतुलित व्यक्तित्व का विकास', 'सामाजिक संगठन का निर्माण', 'आत्म सुरक्षा की तैयारी', 'सामाजिक भावना की वृद्धि', 'राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना', 'वसुधैव कुटुम्बकम् की दृष्टि' इत्यादि को शामिल किया गया है, जिनसे संतुलित व्यक्तित्व का विकास संभव होता है। शिक्षार्थियों की रुचियों का विकास करना; उनमें अच्छी आदतों को विकसित करना; उनकी विचार-शक्ति का विकास करना; उनके सामाजिक दृष्टिकोण को विकसित करना; व्यावसायिक तथा उदार शिक्षा प्रदान करना; उनके अंदर प्रेम, सद्भावना, सहानुभूति, सहयोग, धैर्य, सहनशीलता, आत्मानुशासन एवं कर्त्तव्यपरायणता आदि गुणों का विकास करना भी शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों में निहित हैं।

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

देश की शिक्षा-प्रणाली को लेकर भारत सरकार ने अब तक अनेक आयोगों का गठन ही नहीं किया, अपितु उनकी बहुत सारी सलाहों पर अमल भी किया, फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके संबंध में कोठारी आयोग (1964-66) का मंतव्य है कि बार-बार सलाह देने के पश्चात् भी दुर्भाग्य की बात यह है कि विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है और अभिभावक तथा विद्यार्थियों द्वारा इसका चयन अन्य विकल्प उपलब्ध न होने की दशा में ही किया जाता है। 'शिक्षा के व्यवसायीकरण' का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है– "किसी व्यवसाय में प्रशिक्षण अर्थात् विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना, ताकि वह अपना जीवनयापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ-साथ उन पाठ्यक्रमों की भी व्यवस्था की जाए, जो उनको शिक्षा के साथ-साथ किसी व्यवसाय में भी निपुणता प्रदान करें।"

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

अधिकांश लोगों को आश्चर्य होता है कि स्कूलों में राजनीतिक जागरुकता बढ़ाना क्यों आवश्यक है? क्या आप अपने आप को ऐसे परिदृश्य में पाते हैं, जहाँ राजनीति और शिक्षा के बीच संबंधों में एक वैर का भाव दिखाई देता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को एक आदर्श उदाहरण के रूप में रखने में संकोच न करें। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को आधुनिक युग के महानतम नेताओं में से एक माना जाता है और उनकी अनुकरणीय नेतृत्व शैली सबसे शानदार घटनाओं में से एक है, जिसे कई लोग सीखना चाहते हैं। उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ईर्ष्यापूर्ण नेतृत्व की स्थिति कैसे मिली, यह जानने के लिए राजनीति और शिक्षा को एक साथ लाने वाले अधिक सूत्रों को एकीकृत करने की आवश्यकता पर पर्याप्त बल दिया जाना चाहिए। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक शिक्षार्थी के पढ़ने, समझने और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। अशिक्षित नेताओं द्वारा शासित दुनिया की कल्पना निराधार है। यह प्रशंसनीय नहीं लगता, है न? इसीलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि चुस्त-दुरुस्त दिखना ही प्रभावी नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ नहीं दर्शाता है, फिर भी यह कई घटनाओं में से एक के रूप में मदद करता है, जो एक महान नेता बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षा किसी की सोच को कहीं अधिक विस्तृत करती है। हालाँकि, हमें विद्यालयों/संस्थानों में अधिक राजनीति

शुरू करने में सावधानी बरतनी चाहिए। शिक्षा-प्रणाली को वामपंथी झुकाव के लिए जाना जाता है, विशेषकर विश्वविद्यालयों को। लोकसभा के नवीनतम आम चुनाव में वामपंथी दलों में पूर्वाग्रह अधिक था, किंतु वे पराजित हुए। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे भविष्य के नेताओं और राजनेताओं को राजनीति सिखाते समय यह सुनिश्चित करना होगा कि वे अपनी संस्कृति और राष्ट्रीयता के प्रति गौरव का भाव रखें। ऐसा करने पर ही हम वामपंथी पूर्वाग्रह और रुख को समाप्त कर सकते हैं तथा हम राजनीतिक विचारों की बजाय एक संतुलित राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि शिक्षार्थियों को राजनीति के विभिन्न मत-मतांतरों के बारे में व्यापक जानकारी देकर राजनीतिक छटा की चरम सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए और यह सर्वोपरि होना चाहिए कि वे सूचनाओं के अंतराल में अपना मन बनाने में सक्षम हों।

राजनीतिविज्ञान और कानून उन सर्वोत्तम पाठ्यक्रमों के रूप में पर्याप्त प्रमाणित हो सकते हैं, जो चतुराई से राजनीति और शिक्षा के बीच के बंधन को जोड़ते हैं। शिक्षण संस्थानों में या तो प्रभावी नेतृत्व प्रणाली के माध्यम से या पाठ्यक्रमों के माध्यम से राजनीति को शामिल करना भविष्य के नेताओं को आकार देने में सहायता करता है, साथ ही जनता को भी यह शिक्षित करता है कि प्रशासनिक प्रक्रियाएँ कैसे होती हैं? हर यात्रा एक कदम से शुरू होती है। ऐसे मामलों में, स्कूलों में राजनीतिक घटनाएँ होने से छात्रों को अपने भविष्य और जीवनयापन का दिशा की तैयारी करने में मदद मिलती है। यह तय किया जाना चाहिए कि राजनीति न केवल राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होती है, बल्कि कॉर्पोरेट जगत में भी होती है। ऐसे वातावरण के संपर्क में आने वाले छात्र नीति सलाहकार बनने के साथ-साथ सरकार और कॉर्पोरेट एजेंसियों दोनों में उत्साही शोधकर्ता बनने का एक बेहतर मौका पाते हैं। ऐसा इसीलिए हो पाता है, क्योंकि राजनीति और शिक्षा की कड़ी उनके सहजीवी संबंधों के मूल्यों को दर्शाती है। स्पष्टतः राजनीति और शिक्षा एक-दूसरे को परिभाषित करते हैं। राजनीति और शिक्षा दो ऐसे क्षेत्र हैं, जो सीखते समय समान विषयों पर केंद्रित होते हैं। इसका तथ्य यह है कि प्रत्येक शिक्षक पहले शिक्षार्थी होता है; प्रत्येक नेता पहले प्रशिक्षु होता है। हालाँकि एक बात स्थिर रहती है कि ज्ञान सर्वोपरि है। यह बताने के लिए कि राजनीति और शिक्षा में हमेशा एक सहजीवी बंधन रहेगा, ये दो उदाहरण पर्याप्त हैं।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के लिए पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं, अभिभावक व शिक्षक भी जिम्मेदार हैं, जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरु-शिष्य परंपरा हमारी अपनी शिक्षा पद्धति है, जिसमें छात्र अनुशासन में बँधकर गुरु का सम्मान करते आए हैं और शिक्षा पाते रहे हैं। परंतु, अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है, जिस कारण से वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। अभिभावक अपने पाल्यों को शिक्षकों के पास तो भेज देते हैं, लेकिन यह जानने का प्रयास नहीं करते हैं कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्या कमियाँ हैं और इन कमियों को दूर करने में उनकी स्वयं की क्या भूमिका है? सच्चाई तो यह है कि प्राचीन शिक्षा पद्धति के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात-प्रतिघात किए हैं। इस पर हम सभी के साथ राजनेताओं को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव हेतु गहन चिंतन करना होगा। वर्तमान में शिक्षक व शिक्षार्थी के पारंपरिक पवित्र संबंधों में कमी आई है। यह संबंध अब एक औपचारिकता मात्र रह गया है। शिक्षार्थियों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें शिक्षार्थी ही नहीं, अपितु कुछ सीमा तक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। देखने में आ रहा है कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु-शिष्य संबंध निस्स्वार्थ भाव के थे, किंतु वर्तमान में ये स्वार्थपरक हो गए हैं। धन-लोलुपता और अकर्मण्यता ने शिक्षक की गरिमा को ठोस पहुँचाई है, जिस कारण से यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है कि अभिभावक, गुरु, शिष्य अपनी कमियों को दूर करने की दिशा में चिंतन करें। दूसरी ओर पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए उत्तरदायी है। इस क्षरण को दूर करने के लिए सबके लिए समान प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ेगी। आज की शिक्षा-व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे अन्य कारण भी हैं। शिक्षार्थियों की कक्षा में उपस्थिति कम होने से अध्ययन-अध्यापन की स्थिति कमजोर हुई है। कक्षाओं के सुचारु रूप से न चलने के कारण शिक्षा-व्यवस्था क्षरित हुई है। कक्षा में शिक्षार्थियों की उपस्थिति को लेकर अधिसंख्य शिक्षा संस्थान गंभीर नहीं हैं, क्योंकि इन संस्थानों के बहुसंख्य शिक्षक निजी कोचिंग व निजी विद्यालय चलाने लगे हैं और शिक्षार्थियों को विद्यालय से बाहर ट्यूशन के लिए विवश कर देते हैं। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है और न ही पर्याप्त योग्य शिक्षक, जिसके कारण शिक्षा

का बाजारीकरण होता चला गया, जो अब चरम पर है। इस समानांतर शिक्षा प्रणाली में धनार्जन ही मुख्य ध्येय रह गया है। अनेक राजनेताओं व लालफीताशाहों ने भी अपने निजी संस्थान खोल रखे हैं।

1.2.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी देश या प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई, तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों मे आधारभूत ढाँचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पाँच-पाँच कक्षाएँ सँभाल रहा है। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। "सरकारी स्कूल की बात करें, तो यहाँ चार वर्षों से कोई अध्यापक है ही नहीं।" ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। यह स्थिति देश के संपन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो, तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या कोई सरकार इतनी लाचार हो सकती है कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी न नियुक्त कर सके? एक खबर और देखिए– "गाँव के स्कूल में एक अध्यापिका है। यह तीन साल में स्कूल गई है। यहाँ बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिकाओं की व्यवस्था की है।" ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। लगभग पाँच साल पहले केंद्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले, क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती, यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो भी रहा है या नहीं। अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए, क्योंकि शिक्षा की उपेक्षा देश के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है।

1.2.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और सभी सिद्धांतों का एक मात्र उद्देश्य "मनुष्य का कल्याण करना" है। मानव जीवन में संस्कार और संस्कृति का बहुत महत्त्व है। संस्कार संपन्न संतान ही गृहस्थ की सफलता और समृद्धि का रहस्य है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का कर्त्तव्य बनता है कि वे अपने वच्चों को नैतिक बनाएँ और कुसंस्कारों से बचाकर बचपन से ही उनमें अच्छे गुणों व संस्कारों का बीजारोपण करें। लेकिन, आज भारतीय संस्कृति और संस्कार सब लुप्त होते दिखाई दे रहे हैं। आज बालकों में हिंसा तथा व्यभिचार की प्रवृति बढ़ रही है। आखिर क्यों आज युवा वर्ग परिश्रम और धैर्य से दूर होता जा रहा है? समाज में सात्विक प्रवृत्ति का दमन होता जा रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ पूरा विश्व हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना रहा है, वहीं हम अपनी संस्कृति को भूलकर उनकी संस्कृति को अपना रहे हैं। यह हमारी मूर्खता नहीं तो और क्या है? आज हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना करने लगे हैं। संस्कारों की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अंधानुकरण से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियाँ, शिक्षा पद्धति में बदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियाँ और पाश्चात्य रहन-सहन को अपनाने से अनेक सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

1.2.6 योग्य शिक्षकों का अभाव

"भारतीय शिक्षा प्रणाली बुरी नहीं है, बल्कि समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते हैं। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षक, विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्या के रूप में देखा जाता है। इसमें सारा जोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केंद्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिजाइनिंग में शिक्षकों के फीडबैक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता है और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

मनुष्य के लिए शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीनकाल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए, शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

आधुनिक समय में योग्य शिक्षको का अभाव और अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है। जरूरत इस बात की है कि शिक्षकों के द्वारा किए गए कार्यो का प्रचार-प्रसार होना चाहिए तथा उनकी लिखी हुई कृतियों को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए। इन्हीं सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने बाँदा जनपद के एक सुयोग्य शिक्षाविद् **प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान** पर लघुशोध करने का निर्णय लिया है।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए समस्या कथन हेतु निम्नांकित शीर्षक का चुनाव किया गया है।

"प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान"।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोधाध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल, सुव्यवस्थित एवं सुगम हो जाता है। अतः इस शोधाध्ययन के लिए निर्धारित उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना
- प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल की साहित्य सर्जना का अध्ययन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोधकार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए व अध्ययन की विधि शोध-प्रक्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने के लिए अनिवार्य होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का अविष्कार किया है, जिनका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघुशोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए, विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन एवं केस अध्ययन विधियों का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक का महत्त्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार ''वर्णनात्मक 'क्या है' का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा संबंध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू हैं, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पाई जा रही हैं, प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं, उन्हीं से इसका संबंध है।'' वर्णनात्मक का प्रयोग अग्रलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है– वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थितियों के विषय के ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसोधानकर्ता केवल समस्या से संबंधित तथ्यों को ही एकत्रित नहीं करता है, बल्कि वह समस्या से संबंधित विभिन्न चरों में आपसी संबंध ढूँढने का प्रयास करता है और साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के संबंध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्त्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में राग-द्वेष के लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का भी अध्ययन करने के लिए उसके जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारंभिक सूचनाएँ, अतीत की घटनाएँ तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती है एवं उनका विश्लेषण करके परिणाम ज्ञात किए जाते हैं। जानकारी में

साक्षात्कार-प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण तथा मापकों आदि का प्रयोग किया जाता है, जिनके आधार पर व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएँ जानने की समुचित विधि अपनाई जाती है। इस विधि में अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता-पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पड़ोसी, विद्यालय संबंधी तथ्य, मित्रगण, सहयोगी एवं संबंधित अभिलेख इत्यादि से सूचनाएँ एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के संबंध में अध्ययन किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन में प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया है। वे हिंदी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ मूर्धन्य शिक्षाविद, प्रसिद्ध लेखक, कवि, आलोचक, संपादक, पत्रकार, कुशल प्रशासक एवं समाजसेवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा अपनी लेखनी से जनसामान्य को लाभान्वित कर रहे हैं। उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित यह लघुशोध केवल हिंदी भाषा-साहित्य के ही शिक्षकों के लिए नहीं, अपितु पूरे शिक्षक वर्ग, संपूर्ण बौद्धिक वर्ग और पूरे समाज के लिए भी प्रेरणादायी हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। पूरी दृढ़ता के साथ मेरा यह भी मानना है कि आदरणीय प्रो. शुक्ल का उद्यानवर्णी सुवाषित व्यक्तित्व सभी के जीवन में सुगंधित सुमन बिखेरने में सक्षम हो सकेगा तथा सभी विद्यार्थी एवं जनसामान्य भी इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्तकर हिंदी भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति के उत्थान में अपना योगदान दे सकेंगे।

द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्त्वपूर्ण चरण है, क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है, जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव-सृजित ज्ञान के तीन पथ होते हैं–ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढ़ी को ज्ञान का स्थानांतरण और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी शोध में ये तथ्य विशेष महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढ़ी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिंतन, परिष्करण अथवा पूर्ण व आशिंक परिवर्तन करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से संबंधित यथासंभव उपलब्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व गतवर्षों में एकत्रित किये गए अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरणों से अपने को पूरी तरह से परिचित करने से यह ज्ञात होता है कि समस्या से संबंधित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है, उसमें शोध की कौन-सी प्रविधि प्रयुक्त की गई है और समस्या का कौन-सा पक्ष ऐसा है, जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यावहारिक आधार पर मानव उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त करके चिंतन-मनन, शोधन और परिवर्तन करके निरंतर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। ज्ञानार्जन के तीनों पहलुओं–ज्ञान संचयन, समानुपातिक प्रेषण-संप्रेषण, ज्ञानवर्धन द्वारा किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धांतों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से संबंधित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं। "डॉ. सी.वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का संबंधित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है, जब तक कि उस शोध से संबंधित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो।" अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य संबंधित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति

के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई है तथा सदियों से उसका एक क्रम निरंतर चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया अनंत है। जब तक मानव जीवन है, उसकी यह ज्ञान-तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती है। क्या हो? कैसा हो? या कैसा होना चाहिए? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है।

2.2 शैक्षिक योगदान से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

1. शादाब आबी, (2009) ने "डॉ. जाकिर हुसैन एवं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–

- दोनों के विचारों में पारंपारिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।

"डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन"

(A Comperative Study of Educational Thoughts of Dr. Zaqir Hussain & Dr. A.P.J. Abdul Kalam)

3295

शिक्षाशास्त्र विषय में

पी-एच०डी०

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध – प्रबन्ध

निर्देशक –	शोधकर्ता –
डॉ० (मेजर) जे०पी० सिंह	आबी शादाब
एम०एस-सी०, एम०एड०, पी-एच०डी०	एम०ए०(शिक्षा शास्त्र)
पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षा विभाग एवं	प्रवक्ता – बैकुण्ठ नाथ, महाविद्यालय
पूर्व प्राचार्य एल०बी०एस०पी०जी० कालेज	करनैलगंज, गोण्डा (उ०प्र०)
गोण्डा(उ०प्र०)	

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, (उ०प्र०)

2009

चित्र 2.2.1 **शोध शादाब जी के द्वारा**

- जाकिर साहब व कलाम साहब दोनों के अनुसार शिक्षा बच्चों के सर्वोत्तम का सर्वांगीण विकास है, दोनों विचारकों के इस प्रयत्न को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते हैं।
- अनुशासन के संबंध में भी दोनों के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की चर्चा दोनों विचारक करते हैं, शारीरिक दंड को बिलकुल समाप्त करने के पक्ष में है। वर्तमान समय में भी आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष की बातें प्रासंगिक हैं।
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारको ने सहसंबंध, समन्वय, समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया है।

2. सिंह, किरन (2008) ने "रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि–

VBSP-03970-T05637

रवीन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रांसगिकता

वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर की शिक्षा में डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध

2008

निर्देशक
डा0 मयानन्द उपाध्याय
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र
राजा श्री कृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

शोधकर्ती
कु0 किरन सिंह
एम0ए0, बी0एड0

शोध–केन्द्र
शिक्षा संकाय
राजा श्री कृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

नामाकंन संख्या–PU 2004/218

चित्र 2.2.2 **शोध किरन जी के द्वारा**

- रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्विक और नैतिक विकास में सहायक होती है।
- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शांत वातावरण एवं प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहते थे। जहाँ छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अंतिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की वास्तविकता ही मानवता है।
- बच्चों के अंदर विश्वबंधुत्व की भावना भूमंडलीकरण की बात बनती जा रही है, संचार के माध्यम बढ़ते जा रहे हैं। बच्चों में देश-विदेश के प्रति प्रेम को भी बढ़ावा मिले।
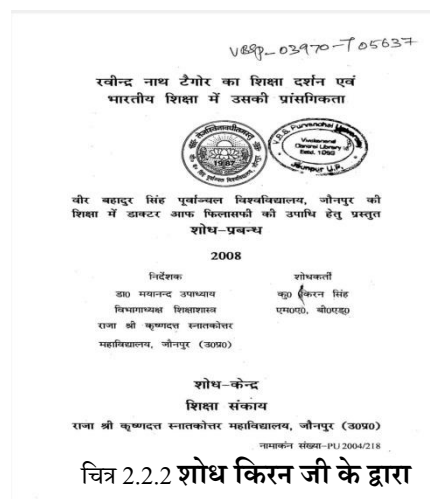
3. सिंह, अनंत बहादुर (2008) ने "मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–

मूल्य-शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Educational Thoughts of Ravindranath Tagore and Mahatma Gandhi with Special Reference to Value Education

4121

'शिक्षा शास्त्र' विषय में डॉक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध।

शोधार्थी :
अनन्त बहादुर सिंह

शिक्षा-शास्त्र

सत्र – 2008

चित्र 2.2.3 **शोध अनंत जी के द्वारा**

- रवींद्रनाथ टैगोर हमारे देश के न केवल एक उच्चकोटि के कवि, गायक, संगीतज्ञ, नाटककार, कथाकार, निबंधकार, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, मानवतावादी तथा राष्ट्रवादी थे, वरन वे एक कट्टर अंतरराष्ट्रीयतावादी थे। वे सच्चे अर्थ में एक विश्व नागरिक थे, जिनकी राष्ट्रीयता उनकी विशाल अंतरराष्ट्रीयता के अनुरूप थी।
- इनके संबंध में लिखते हुये आर. श्रीनिवास आयंगर लिखते हैं कि टैगोर संसार के महानतम शिक्षाशास्त्रियों में अद्वितीय स्थान रखते हैं, क्योंकि उन्होंने एक शिक्षादर्शन का विचार किया या निकाला और अपने दर्शन को कार्यक्षेत्र में अनूदित करने में उच्च मात्रा की सफलता प्राप्त की।
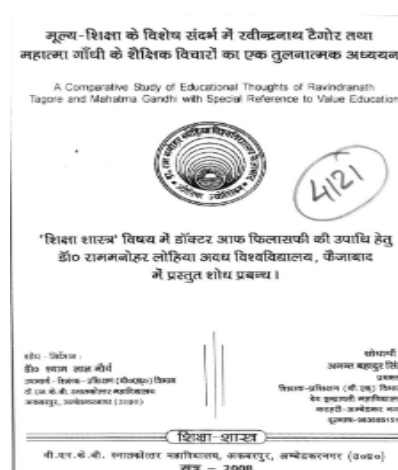
- रवींद्रनाथ टैगोर के संबंध में डॉ. सुरेंद्रनाथ दास गुप्त ने लिखा है कि उनकी प्रतिभासंपन्नता अद्वितीय और अतुलनीय थी और अन्यत्र कहीं भी यह प्रतिभा अथक परिश्रम से संबंधित नहीं पाई जाती है जैसा कि उनके बारे में एक कथन है कि उनका व्यक्तित्व हमारे सामने एक ऐसा चित्र उपस्थित करता है, जो मानव इतिहास में अद्वितीय है। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था कि यह गुरुदेव की उपलब्धि है, जिससे कि उन्होंने इस रिक्त स्थान को अपने निजी प्रयत्नों से भर दिया, यह संकेत शांति निकेतन की ओर है। प्रो. हुमायूँ कबीर का कथन है कि टैगोर ने परंपरा को बिना तोड़े हुए शिक्षा के विचारों में क्रांति ला दी है, इससे स्पष्ट है कि टैगोर ने भारतीय शिक्षा में क्या प्रगति और परिवर्तन किया है।

4. वर्मा, रामनिवास (2005) ने "भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

Th 379
V 59 B
(2005)

डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय
आगरा की
शिक्षाशास्त्र विषय में पी–एच॰डी॰
की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध
2005

निर्देशक
डॉ० पी० पी० सिंह

शोधार्थी :
रामनिवास वर्मा

शिक्षा–संकाय
राजा बलवन्त सिंह कालेज,
आगरा

चित्र 2.2.4 **शोध रामनिवास जी के द्वारा**

- भारतीय संस्कृति मूलतः एक जीवन मूल्य आधारित जीवन पद्धति है, जो अनिवार्य रूप से भारतीय लोकमानस को मूल्य निकायों की ओर निर्देशित करती है। ये मूल्य निकाय भारतीय जनजीवन पद्धति के प्रेरणा स्रोत हैं तथा सदैव से उसे उत्कृष्ट उपलब्धियों को प्राप्त कर अद्वितीय मानव व्यवस्था के निर्माण की दिशा में अग्रसर करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति अपने सरलतम अर्थ में भी लोकजीवन में जीवनमूल्यों के अनुप्रयोग व विनियोग का ऐसा अनन्य उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो भारतीय जनजीवन को गति प्रदान करता है तथा मानव के सृजनात्मक घटकों को प्रेरित-विकसितकर निरंतर नए भारतीय जीवनमूल्यों के निर्माण का कार्य करता है।
- सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भारतीय जीवनमूल्यों को विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों से प्रादुर्भूत हुआ माना जा सकता है। ये विशेषज्ञता के क्षेत्र भारतीय जीवनमूल्यों को तर्काधार प्रदा**न** करते हैं।

5. सिंह, रेनू (2008) ने "भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और यह पाया कि–

- आधुनिककाल में प्रगतिशील कही जाने वाली शिक्षा के अनेक गुण शाहू जी के शैक्षिक विचारों में विद्यमान हैं। स्वतंत्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति, एकाग्रता, चिंतन, समाजीकरण, सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आदर, सर्वांगीण विकास, शिक्षक का सम्मानीय स्थान आदि सभी तत्त्व इसमें हैं, जो शिक्षा के लिए प्रासंगिक, उपयोगी एवं सार्थक हैं व इन्हें उच्चतम शिक्षाशास्त्री के रूप में अधिष्ठित करते हैं।

"भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में"

"EDUCATIONAL CONTRIBUTION OF CHHATARAPATI SHAHU JI MAHARAJ IN INDIA WITH SPECIAL REFERENCE TO THE EDUCATIONAL UPLIFTMENT OF DALITS"

पी-एच.डी. (शिक्षा) हेतु
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
में प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

वर्ष — 2008

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. जे.एल.वर्मा
रीडर, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
(बुन्देलखण्ड कॉलेज), झाँसी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोध प्रस्तुतकर्ती
रेनू सिंह
एम.ए. (भूगोल)
एम.एड.
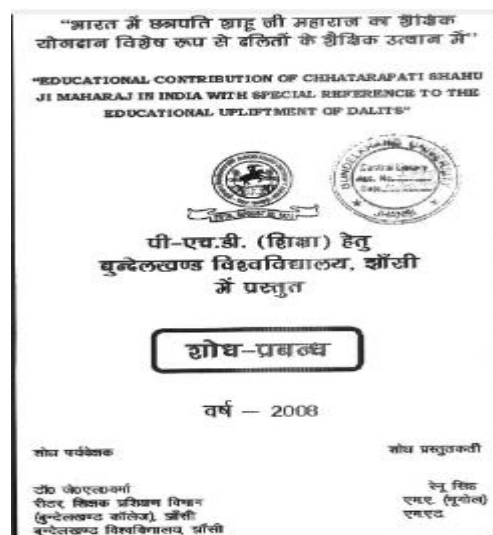
चित्र 2.2.5 **शोध रेनू जी के द्वारा**

- इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धांत हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं, अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले हैं, उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धांत कहा जा सकता है।
- इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपनाकर भारत की उद्देश्यविहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

6. सिंह, नीलम, (1999) ने "भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" शीर्षक पर शोध का अध्ययन किया और यह पाया कि–

भारत वर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान
तथा
वर्तमान समय में उपादेयता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के अन्तर्गत
पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध – प्रबन्ध

निर्देशिका :
डा० मृदुला भदौरिया
रीडर, शिक्षा विभाग
छत्रपति शाहू जी महाराज कानपुर
विश्वविद्यालय, कानपुर

शोधकर्ती :
नीलम सिंह

१९९९

चित्र 2.2.6 **शोध नीलम जी के द्वारा**

- मिशनरियों का शैक्षिक योगदान भारतीय इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। यद्यपि मिशनरियों ने विशुद्ध परोपकारिता की भावना से स्कूल संचालित नहीं किए थे, बल्कि इनका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। फिर भी इन लोगों ने स्कूल की कार्यप्रणाली तथा संगठन में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण सुधार किए, जिसके कारण स्कूल के स्वरूप तथा संरचना के विषय में हमारी धारणाएँ हमारी पारेपरिक अवधारणा से हटकर तथाकथित आधुनिक (भौतिकतावादी) हो गई।

- सर्वप्रथम मिशनरियों ने हम लोगों को स्कूल की नवीन अवधारणा प्रदान की। इसके पहले स्कूल क्या है? और स्कूल किसे कहते है? इस संबंध में हमारे विचार अपने ढंग के थे। मिशनरियों के आगमन से पूर्व देशी पाठशालाओं की स्थिति अत्यंत सोचनीय हो गई थी, ये पाठशालाएँ अधिकांशतः टूटे-फूटे मकानों, गोशालाओं, अस्तबलों या किसी ताल्लुकेदार के मकान एक हिस्से में लगा करती थीं। इस प्रकार स्कूल क्या है? तथा स्कूल में क्या कार्य होगा? जनसाधारण के समझ में नहीं आता था। मिशनरियों ने सबसे पहले विद्यालय को सार्वजनिक शिक्षा का केंद्र माना और भारत में साविधिक शिक्षा की नींव डाली। इस प्रकार मिशनरियों के द्वारा स्कूल के लिए किए गए साविधिक कार्यक्रम को देखकर वर्तमान समय में भारतीयों ने उनकी शिक्षाप्रणाली से सीखकर साविधिक शिक्षा के कार्यक्रम को अपनाया।
- मिशनरियों के आगमन के पूर्व भारत में देशी शिक्षा प्रचलित थी। विदेशी आक्रांताओं की नीतियों के चलते देशी शिक्षा के पाठ्यक्रम अत्यंत संकुचित तथा अपर्याप्त हो गए थे। देश की निर्धनता देशी शिक्षा की अवनति का प्रधान कारण थी। देश की अधिकांश जनता निर्धन होने के कारण अपने बच्चों को नाम मात्र तक की फीस तक नहीं दे पाते थे। देशी शिक्षा के पतन के बाद यूरोपीय जातियों ने प्रविष्ट किया और इसके साथ ही वहाँ की यूरोपीय मिशनरियाँ भी आईं, जिन्होंने धर्मप्रचार के लिए शिक्षा को अपना माध्यम चुना और अनेक प्राथमिक विद्यालय खोले। प्राथमिक शिक्षा के प्रारंभिक प्रयास निशनरियों द्वारा किए गए। इनका उद्देश्य अपनी बस्ती के बालकों की शिक्षा का प्रबंध करना था तथा शिक्षा द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार करना था।

7. **तिवारी, बाबूलाल (1996-97)** ने "वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–

- पं. दीनदयाल जी एक संत राजनेता थे। शिक्षा, संस्कार एवं धर्म उनकी प्रमुख अभिधारणाएँ हैं। वे लोकतंत्र के लिए लोकमत परिष्कार को आवश्यक मानने वाले, अर्थशास्त्र नियंत्रित उद्योग के विरोधी एवं धर्म नियंत्रित अर्थ के पक्षधर थे। समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति राजनीति में नहीं होती वरन् संस्कृति में होती है, उनका ऐसा मंतव्य था, इसीलिए 'संस्कृति ' उनका प्रिय विषय बनी । अतः ये नेता कम सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यकर्ता ज्यादा थे। उनका ध्यान राजनीति की अपेक्षा सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने व वैचारिक चिंतन पर अधिक था।

- दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की सभी विचारधाराओं को अपूर्ण एकांगी एवं प्रतिक्रियावादी मानते थे। पश्चिम द्वारा मानव को रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं वाला प्राणी निरूपित किए जाने को असंगत तथा राजनैतिक प्राणी, सामाजिक प्राणी या आर्थिक प्राणी की संज्ञा को एकांगी मानते थे। उन्होंने माना है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मानव की व्यष्टि व समष्टिगत आवश्यकता हैं। इन चारों पुरुषार्थों के अनुसार ही हमारी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओं को विकसित किया जाना चाहिए। उनके इसी चिंतन से ही उनका 'एकात्म मानववाद' प्रकट हुआ।

वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में
पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का
आलोचनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
की पी.एच.डी. "शिक्षा शास्त्र" उपाधि हेतु
"प्रस्तुत शोध प्रबन्ध"

1996-97

बाबूलाल तिवारी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

चित्र 2.2.7 **शोध बाबूलाल जी के द्वारा**

8. शर्मा डॉ. शशिकांत (2007) ने "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि–

- गिजू भाई शिक्षा द्वारा स्वतंत्रता, निर्भयता, स्वावलंबन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, मैत्रीभाव, दया, अपरिग्रह, सहिष्णुता, सेवाभाव, सामाजिक संवेदनशीलता, स्वच्छता, सदाचरण, सादगी व सरलता, सत्-असत् विवेक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सौंदर्य, प्रेम, स्वाधीनता, नियमन व स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को अत्यंत मौलिक रूप से परिभाषित किया है।

- गिजू भाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है, बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है, परंतु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिंदगी व्यतीत कर दे, तब भी सफलता दूर ही रहेगी। यह विकास इतना कठिन, इतना सूक्ष्म है कि मात्र कथा-कहानी सुनाकर या उपदेश देकर नहीं किया जा सकता है। वे कहते हैं कि सत्य का पाठ पढ़ाकर बालक से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है, अज्ञानी होता है या ढोंगी। इस प्रकार गिजू भाई उपदेशात्मक रूप से नीति शिक्षण की व्यर्थता सिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकरतम कीटाणु घुस गए लगते हैं। चूँकि वे अपने अंदर की अनीति से भय खाते हैं, उससे लड़ने में सक्षम नहीं है, अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण की क्रिया मनुष्य की आत्मा को स्वतंत्रता से भ्रष्ट करती है। मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है, पर चाहता है कि बालक नीतिवान बने, जो कदापि संभव नहीं है।

गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक
भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, से
शिक्षा शास्त्र में
पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध - प्रबन्ध

2007

शिक्षा संस्थान:-
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

चित्र 2.2.8 **शोध शशिकांत जी के द्वारा**

- गिजू भाई बालक को प्रकृति की शिक्षा दिए जाने का प्रबल समर्थन करते हैं। उनका कहना था कि अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनाएँगे अथवा दानव? प्रकृति द्वारा दिया गया शिक्षण ही गिजू भाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है। इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है और वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थायी रहता है। प्रकृति शिक्षण में स्व-शिक्षण का मूल भी निहित है। गिजू भाई कहते हैं कि प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं विश्वास की पोषक होती है। प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है। अतः उसे चाहिए कि वह बाल्यावस्था से ही प्रकृति के अवदान से अपने प्राणों को भर ले, अपने आत्मिक विकास के तत्त्व उसे प्रकृति से ही ग्रहण कर लेने चाहिए।

9. तिवारी सुधा (2009) ने “लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन” किया और यह पाया कि–

‘‘लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं
पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान
का तुलनात्मक अध्ययन’’

"A Comperative Study of Educational Contribution of
Mahatma Gandhi and Pt. Deen Dayal Upadhayay in
the Democratic Education of India"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के
‘शिक्षाशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की
उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

निर्देशक

शोधकर्त्री
सुधा तिवारी
(एम०ए०,एम० एड०)
अध्यापिका

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
2003–2004

चित्र 2.2.9 **शोध सुधा जी के द्वारा**

- सदियों से पराधीनता के कारण अपनी गरिमामयी संस्कृति से अनभिज्ञ भारतीय जनता को पुनः चेतन तथा सचेष्ट करने के लिए भारतीय विचारकों के विचारों को अपनी परिस्थिति के अनुसार कार्य करना पड़ा, न कि वे इसके स्थान पर पश्चिमी विचारकों से विचार सहमति या असहमति प्रगट करने का कार्य करते। अतः इतना कहना ही पर्याप्त है, कि अपने क्षेत्र और अपने कार्य के अनुरूप उन्होंने शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया। भारतीय विचारकों में प्रतियोगिता की भावना नहीं थी, वरन् जीवन के सच्चे मूल्यों की खोज करना, जो कि काल के गर्त में समाधिस्थ कर दिए गए हैं, उनको पुनः जागृत कर स्मरण करना ही उनकी शिक्षा का लक्ष्य था।
- कुछ मानवों को ऐतिहासिक घटनाएँ बनाती है, जब कि कुछ लोग स्वयं इतिहास का निर्माण करते हैं। महात्मा गाँधी स्वयं ऐसे पुरुष थे, जिन्होंने अपने मस्तिष्क, मन व हृदय की विशेषताओं, गुणों तथा महान कार्यों से अपना स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं एक इतिहास का निर्माण किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रभावी व्यक्तित्व से नवीन भारत का निर्माण किया था और एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति के विचारक के रूप में संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।
- महात्मा गाँधी के विचार परिवर्तित होने वाले वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग में पूर्ण संगति रखते हैं। यदि हम उनकी शिक्षाओं और दार्शनिक विचारों को अपनाने में समर्थ हो सकें, तो रामराज्य एवं नए स्वर्ण युग का निर्माण कर सकते हैं।

10. मिश्रा, शशि (2002) ने "समाजवादी चिंतकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–

"समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों"
का तुलनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
की
शिक्षा विषय में
डाक्टर आफ फिलासफी हेतु
प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक
डा० [illegible]
अधिष्ठाता शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झाँसी

अन्वेषिका
श्रीमती शशि मिश्रा
एम०ए०, एम०एड०

चित्र 2.2.10 **शोध शशि जी के द्वारा**

- भारतीय दृष्टि में दर्शन और जीवन इतने संपृक्त रहे हैं कि इनमें अंतर नहीं देखा गया। प्राचीनकाल में संपूर्ण जीवन की व्याप्ति दर्शन का क्षेत्र थी। महर्षिगण तपस्या करके सत्य का दर्शन करते थे तथा जीवन में उतारते थे एवं अपने व्यवहारपरक अनुभव की शिक्षा दूसरों को प्रदान करते थे। भारतीय दार्शनिकों के सामने दुःखों के आत्यांतिक नाश तथा पूर्ण आनंद अथवा मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य था। उन्होंने अपने-अपने दृष्टिकोण से उसकी प्राप्ति के मार्ग का शोधन किया था, अतः उनमें बीच की कुछ बातों में भिन्नता होने पर भी कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर साम्य है। सर्वश्री सतीशचंद्र चट्टोपाध्याय एवं वीरेंद्रमोहन दत्त ने नैतिक व आध्यात्मिक बिंदुओं में समानता निरूपित की है।
- भारत के सभी दर्शनों का उद्देश्य पुरुषार्थ साधना रहा है।
- दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असंतोष से होती है, परंतु आध्यात्मिक मनोवृत्ति के कारण उसमें आशा का संचार होता रहता है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में डॉ. जाकिर हुसेन एवं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का एक अध्ययन, मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवींद्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान, विशेष रूप से दलितों के

शैक्षिक उत्थान में अध्ययन, भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता, वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन तथा समाजवादी चिंतकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। ध्यातव्य है कि **"प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के शैक्षिक योगदान"** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघुशोध कार्य करने का निश्चय किया गया है।

तृतीय अध्याय
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 बाल्य जीवन

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी का जन्म सन् 1963 ई. के अक्टूबर माह की 17-18 तिथियों की रात्रि में उत्तर प्रदेश के गंगा-यमुना के दोआब में कानपुर-प्रयागराज के बीच के अंतर्वेद नाम से विख्यात भू-भाग में स्थित पौराणिक-ऐतिहासिक जनपद फतेहपुर की नगरपालिका-क्षेत्र में बसे हुए ग्राम लोटहा में हुआ, जो फतेहपुर नगर से दक्षिण दिशा में 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इनके कीर्तिशेष पिता पंडित चंद्रशेखर शुक्ल मूर्धन्य शिक्षाविद, कवि एवं प्रतिष्ठित नागरिक थे। प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी बचपन से ही गंभीर, धीर एवं शांत स्वभाव के थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा फतेहपुर जनपद के खागा तहसील के विजयीपुर विकासखंड के मुख्यालय में स्थित प्राथमिक विद्यालय में संपन्न हुई। प्रखर बुद्धि वाले अत्यंत मेधावी बालक शुक्ल जी के व्यक्तित्व-निर्माण का श्रेय इनके माता-पिता को जाता है। प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी आज देश-विदेश में एक प्रबुद्ध बौद्धिक, कुशल शिक्षाविद, विख्यात भाषाविद, स्थापित कवि-लेखक-आलोचक, अनुवादक, प्रसिद्ध संपादक, समर्थ प्रशासक, वैमानिकी-कंप्यूटर अभियांत्रिकी में निष्णात अभियंता, पूर्व वायुयोद्धा और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सर्वप्रिय हैं। कवि-साहित्यकार बनने की प्रेरणा उन्हें अपने कवि-साहित्यिक पिता जी और बचपन से किशोरावस्था तक की जीवन-यात्रा में मिले परिवेश से मिली। ग्राम लोटहा वीर शिरोमणि अमर शहीद ठाकुर दरियाव सिंह के पूर्वज खड़क सिंह द्वारा बसाए गए खागा कस्बे से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित है। फतेहपुर जिले में स्थित कई स्थानों का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है, जिनमें भृगु ऋषि की तपोस्थली भिटौरा
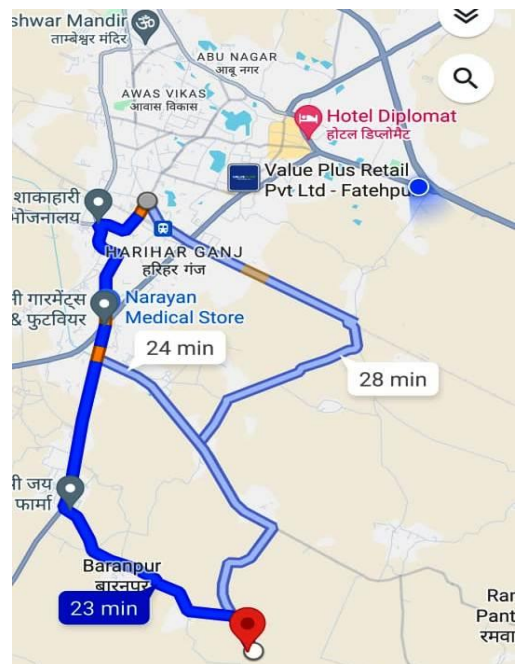
चित्र 3.1.1 **फतेहपुर नगर-लोटहा मार्ग का नक्शा**

(भृगुठौरा), महाभारतकाल में ब्रह्मास्त्र पाने की लालसा से तप हेतु आए हुए द्रोणाचार्य-पुत्र अश्वत्थामा की तपस्थली (यमुना तटवर्ती) असोथर तथा (गंगातट स्थित) देव चिकित्सकों अश्विनीकुमारों की नगरी असनी घाट प्रमुख हैं। ग्राम लोटहा आधुनिकता और भौतिकता की दौड़ में अब गाँव का स्वरूप छोड़ रहा है। ग्रीष्मावकाश की अवधि में गाँव की चौपालों, रामचरितमानस-पारायण के अनुष्ठानों, विद्यालय की बालसभाओं, साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा वैवाहिक आयोजनों के शिष्टाचार-विधानों में सक्रिय रहते हुए कविता-गीत-रचनाएँ सुनाकर लोगों का दिल जीतने में वे सदैव माहिर रहे। विद्यालय के सारस्वत कार्यक्रमों में सहभाग करते हुए अपने संभाषण या वक्तव्य के बीच तमाम कवियों की कविताओं को प्रस्तुत करने का कमाल उन्होंने अपने छात्रजीवन में ही हासिल कर लिया था। इसी दैवीय अभ्यास ने इनको स्वरचना की ओर प्रेरित किया और कक्षा आठ में पढ़ते हुए ही उन्होंने अपनी पहली कविता आँग्लभाषा में लिखी। इसी अवधि में उन्होंने अपनी पहली कहानी हिंदी में लिखी और उसके बाद रचनाधर्मिता का जो सिलसिला हुआ, वह अनवरत रूप से अद्यतन जारी है। वे स्वस्थापित साहित्य-संस्कृति-भाषा की संवाहक शोध पत्रिका 'नूतनवाग्धारा' के माध्यम से साहित्य की धरती को उर्वरा बनाए हुए हैं तथा नवोदित रचनाकारों को रचनाधर्मिता की संजीवनी पिलाकर उनकी लेखनी को निरंतर धार दे रहे हैं।

बाल्यकाल से ही वे जिज्ञासु, संवेदनशील और प्रकृति-प्रेमी रहे, क्योंकि वे एक धार्मिक-सनातनी परिवार में पैदा हुए, पले-बढ़े और शिक्षित-संस्कारित हुए। उन्हें बचपन से ही अपने पिता जी के विद्यालय-परिसर में अपनी माता जी व भाई-बहनों के साथ रहने का सुयोग मिला। उनके पिता जी फतेहपुर जनपद के विजयीपुर विकास खंड के समीप खागा-किशनपुर मार्ग के किनारे स्थित 'जनता विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' (बाद में 'पं. रामगोपाल त्रिपाठी इंटर कॉलेज') में शिक्षक (व कार्यवाहक प्रधानाचार्य भी) रहे। प्रकृति की गोद में स्थित विद्यालय के उत्तर में कुआँ, तालाब, बस्ती व बेर-आम-महुओं के बाग थे, पूरब में दूर तक फैले हरे-भरे वन थे। दक्षिण में (पश्चिम से पूरब को बहने वाली) सदानीरा नहर थी और पश्चिम में मुख्य द्वार के सामने खागा-किशनपुर मार्ग था। विद्यालय के प्रांगण में भी अनेक प्रकार के हरियाली से आच्छादित छायादार वृक्ष थे, फल-फूल वाले पेड़-पौधे थे तथा रंग-बिरंगी छटाओं वाली सुंदर-आकर्षक पुष्पों की क्यारियाँ व वीथिकाएँ थीं। विद्यालय में नियमित रूप से हिंदी-अँग्रेजी के दैनिक समाचारपत्र; चंपक, पराग, नंदन,

बालभारती, चंदामामा, राष्ट्रधर्म, दिनमान, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान आदि पत्रिकाएँ आती थीं, जिनको पढ़ने में उनकी अतीव रुचि थी, जिसके फलस्वरूप उन्हें न केवल जीवन में आगे बढ़ने की दिशा-दृष्टि मिली, अपितु उन्होंने इंजीनियर-प्रोफेसर बनने के सपने भी देखे और उनको पूरे भी किए।

3.2 वंश परंपरा

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के वंश की जड़ें चाणक्यकाल तक फैली हुई हैं। सात पीढ़ियों का लेखा-जोखा तो उन्हीं के पास उपलब्ध है, किंतु लघुशोध की सीमाओं को देखते हुए उनका वंश-वृक्ष संक्षिप्त कर दिया गया है–

चित्र 3.1.2. **प्रो. (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल अपनी धर्मपत्नी के साथ**
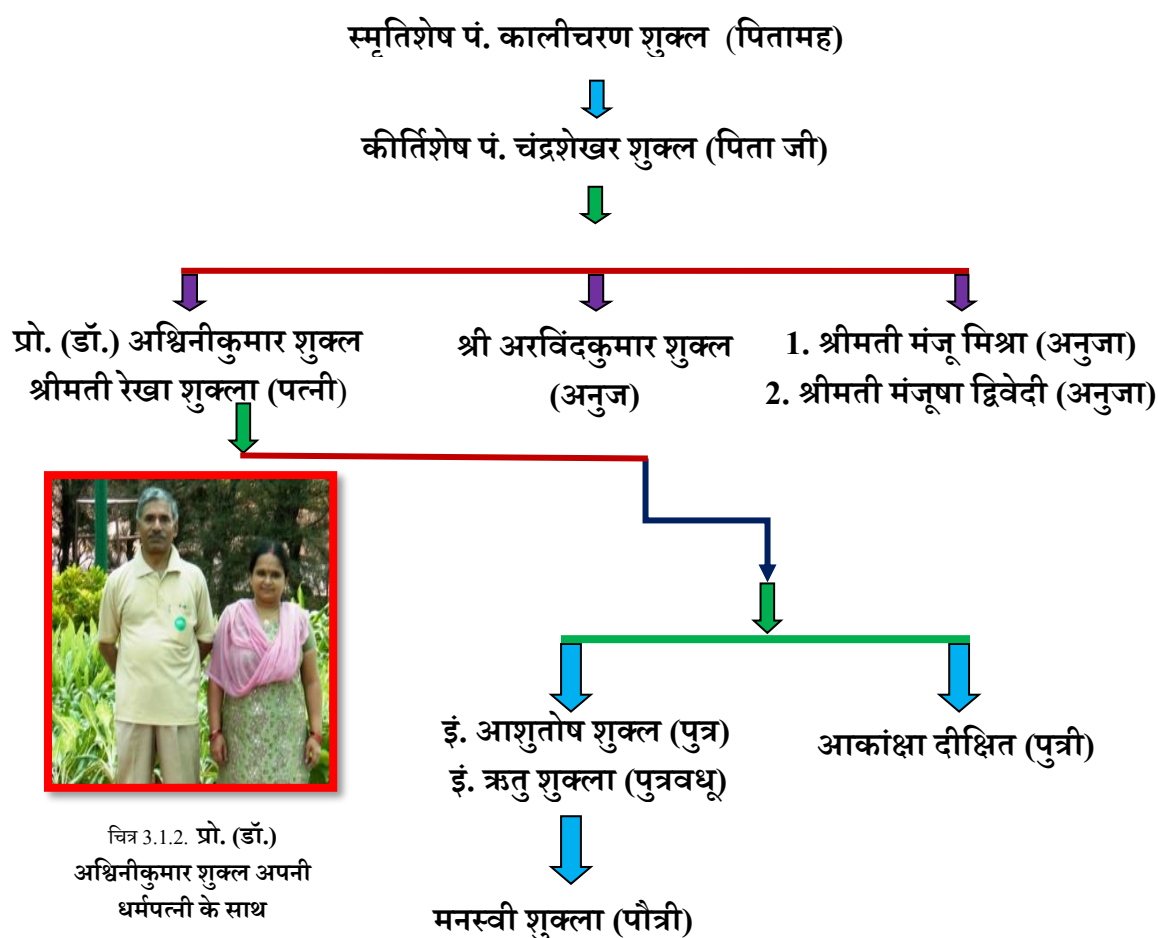
3.3 अध्ययन यात्रा

चित्र 3.3.1 **कक्षा 11वीं का कॉलेज**

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल ने कक्षा पांचवीं तक की शिक्षा फतेहपुर जनपद के खागा तहसील के विजयीपुर विकासखंड के मुख्यालय में स्थित प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। उसके बाद हाईस्कूल तक की शिक्षा उन्होंने जनता विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विजयीपुर (फतेहपुर) से एवं ग्यारहवीं की परीक्षा विजयीपुर से 13 किलोमीटर दूर खागा में स्थित शुकदेव इंटर कॉलेज से उत्तीर्ण की। बारहवीं में अध्ययनरत रहते हुए उनका चयन भारतीय वायुसेना में तकनीकी पद पर हो गया, जिसके कारण से बारहवीं की परीक्षा उन्होंने व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में सर्वोदय इंटर कॉलेज, असोथर (फतेहपुर) से उत्तीर्ण की। उन्होंने कला स्नातक (बी.ए.) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से तथा अँग्रेजी व हिंदी में परास्नातक (एम.ए.) पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से किया। परास्नातक करने के बाद उन्होंने प्रसिद्ध साहित्यकार कविवर 'भवानीप्रसाद मिश्र की कविता : रचना-दृष्टि, संवेदना और शिल्प' विषय पर अपना शोधकार्य पूर्णकर 1997 ई. में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान) से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1998 ई. में उन्होंने पुणे प्रवास की अवधि में सेट महाराष्ट्र (नेट समकक्ष) योग्यता हासिल की। 31 जुलाई 1998 को भारतीय वायुसेना छोड़कर वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पदार्पण करने के उद्देश्य से पुनः जोधपुर आ गए। तब तक भारतीय वायुसेना में सहायक अभियंता के समकक्ष हो चुके थे और भारतीय वायुसेना की विभिन्न विभागीय परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर तथा वैमानिकी अभियंत्रण में लंबे अनुभव के कारण वे उच्च योग्यता धारण कर चुके थे। शिक्षा अर्जित करने की उनकी तृष्णा पूरी नहीं हुई थी, इसीलिए अगस्त 1998 में जोधपुर लौटकर उन्होंने एप्टेक से सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में डिप्लोमा (डी.आई.एस.एम.) किया। इसके पहले 1987 ई. में चंडीगढ़ स्थित केंद्र सरकार के

चित्र 3.3.2 **जोधपुर विश्वविद्यालय**

उपक्रम रीजनल कंप्यूटर सेंटर (RCC) से वे कंप्यूटर और 1995 ई. में भारतीय वायुसेना के तांब्रम, चेन्नई स्थित मेकेनिकल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (MTI) से प्रबंधन के कोर्स कर चुके थे।

3.4 गृहस्थ जीवन

चित्र 3.4.1. **प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल अपनी धर्मपत्नी के साथ**

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का विवाह भारतीय वायुसेना में चयनित होने के लगभग साढ़े चार वर्ष उपरांत हुआ। उनका चयन जब भारतीय वायुसेना में हो गया था, उसी समय से उनके विवाह के लिए प्रस्ताव आने लगे थे। माता-पिता की ज्येष्ठ संतान होने के नाते उनकी इच्छा के विरुद्ध उन पर उनकी माता जी द्वारा दबाव बनाया जाने लगा। चार वर्ष तो वे किसी तरह बचते-बचाते रहे, परंतु अंततः उन्हें अपनी माता जी की जिद के आगे झुकना पड़ा और फिर 22 जून 1985 को उनका विवाह फतेहपुर जनपद के विकास खंड हथगाम के मूल निवासी उत्तर प्रदेश के विद्युत विभाग के उच्च पदस्थ अभियंता की सुपुत्री रेखा जी से हो गया।

उनकी ससुराल ग्राम लोटहा से लगभग 35 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा की ओर हथगाम नामक कस्बे में है, जो फतेहपुर जनपद की खागा तहसील के अंतर्गत आता है। उनका पारिवारिक जीवन उत्तरदायित्वों से भरा हुआ रहा है और उनकी धर्मपत्नी सही मायने में उनकी पढ़ाई-लिखाई एवं अध्ययन-अध्यापन के कार्य में हर प्रकार से सहयोग करती आई हैं तथा यह सिलसिला आज तक जारी है।

3.5 सेवायोजन यात्रा

3.5.1 भारतीय वायुसेना का जीवन

चित्र 3.5.1. **वायुसेना (1982 ई.)**

बारहवीं कक्षा में अध्ययनरत रहते हुए ही उनका चयन भारतीय वायुसेना में हो गया था और 17.7 वर्षों तक अभियांत्रिक पद पर राष्ट्र की सेवा करने के उपरांत वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उतरे तथा सफलता के चरण निरंतर चूमते जा रहे हैं। जिस प्रकार उन्होंने प्रतिभा, कर्त्तव्यनिष्ठा,
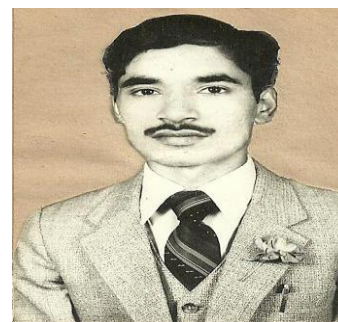
सत्यनिष्ठा, समर्पण और प्रशासनिक-प्रबंधन क्षमता के बल पर भारतीय वायुसेना के शीर्ष के तकनीकी विशेषज्ञों में अपनी जगह बनाई थी, उसी प्रकार उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी वे अपनी सफलता के झंडे गाड़े जा रहे हैं।

3.5.2 उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पदार्पण

चित्र 3.5.2.1. **एन.एम. कॉलेज, हनुमानगढ़**

भारतीय वायुसेना में रहते हुए अर्जित की गई योग्यता के आधार पर उनका चयन राजस्थान के चूरू (अब बीकानेर) जनपद में स्थित श्रीडूँगरगढ़ महाविद्यालय, श्रीडूँगरगढ़ में हिंदी के असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हो गया, जहाँ वे 7 जुलाई 1999 से 3 अगस्त 1999 तक सहायक प्रोफेसर के रूप में हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे। उनकी यह नियुक्ति अस्थाई थी, फलस्वरूप अवसर मिलते ही 4 अगस्त 1999 को उन्होंने राजकीय नेहरू मेमोरियल पोस्ट-ग्रेजएट कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राजस्थान) में हिंदी के सहायक प्रोफेसर के स्थाई पद पर कार्यभार ग्रहण कर लिया और 4 सितंबर 2001 तक वहाँ कार्यरत रहे। सन् 2000 में जब उनके पिता जी सेवानिवृत्त हुए, तो उन्होंने अपने आज्ञाकारी सुपुत्र को घर लौटने के संकेत के रूप में उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) द्वारा विज्ञापित सहायक आचार्यों (प्रोफेसरों) के पदों की सूचना भेज दी , जिसकी परिणति में उन्होंने आवेदन किया, चयन हेतु प्रयागराज जाकर 28 फरवरी 2001 को आयोग के मुख्यालय में साक्षात्कार दिया, हिंदी के सहायक प्रोफेसर के स्थाई पद पर चयनित हुए और 5 सितंबर 2001 में, शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर उत्तर प्रदेश के बाँदा नगर में स्थित सुविख्यात पं. जे.एल.एन. कॉलेज के हिंदी विभाग एवं शोधकेंद्र में सहायक प्रोफेसर का पदभार सँभाला।

3.5.3 विभागाध्यक्ष का उत्तरदायित्व

चित्र 3.5.3.1. **पं. जे.एल.एन. कॉलेज**

संप्रति वे पंडित जवाहरलाल नेहरू कॉलेज, बाँदा के **हिंदी विभाग एवं शोधकेंद्र** के अध्यक्ष पद पर आसीन हैं। इस पद पर वे पिछले सात वर्षों से भी अधिक समय से आरूढ़ हैं। इससे सिद्ध होता है कि अगर व्यक्ति संघर्ष के समय में संयम बरतते हुए व अनवरत रूप से तल्लीन रहते हुए कार्य करे एवं उससे

कभी पीछे न हटे तथा उसका चित्त लक्ष्य-संधान पर केंद्रित रहे, तो अंततोगत्वा व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। भारतीय वायुसेना छोड़ने के बाद प्रो. शुक्ल जी को अन्य विभागों-क्षेत्रों की प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता मिली थी, किंतु उनकी रुचि उच्च शिक्षा के ही क्षेत्र में थी, इसीलिए उन्होंने उसे ही वरीयता दी।

3.6 सम्मान/पुरस्कार

प्रो. शुक्ल जी के साथ हुई वार्ता से पता चला कि वे माँगकर या आवेदनकर सम्मान/पुरस्कार लेने के विरुद्ध है। उनकी इस बात से मुझे गौरव की अनुभूति हुई और पाया कि उन्हें मिले सम्मानों/पुरस्कारों में वास्तविक सम्मान का भाव निहित है। उन्हें मिले राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मानों/पुरस्कारों का विवरण निम्न है–

1. डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान, राष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मेलन के अंतर्गत पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग (मेघालय) द्वारा प्रदत्त, वर्ष 2013;
2. शांति निकेतन साहित्य अलंकरण, शांति निकेतन मानव कल्याण समिति (साहित्य प्रभाग), फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) द्वारा भवानीप्रसाद मिश्र की कविता : रचना–दृष्टि, संवेदना और शिल्प कृति हेतु प्रदत्त, वर्ष 2014;
3. श्री केशरदेव गिनिया देवी बजाज स्मृति सम्मान, राष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मेलन के अंतर्गत पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग (मेघालय) द्वारा प्रदत्त, वर्ष 2018;
4. पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी शिखर सम्मान, लेखक मिलन शिविर एवं सम्मान समारोह के अंतर्गत पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग (मेघालय) द्वारा जनकपुर नेपाल में प्रदत्त, 2023।

3.7 साहित्यिक सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान

3.7.1 सम्मेलन/सभाएँ

1. इक्कीसवीं शताब्दी में युवा व नारी उत्थान, हनुमानगढ़ (राजस्थान), 09.01.2000 (मुख्य अतिथि),
2. कालिजंर, पर्यटन एवं वनस्पति संपदा का विकास, कालिजंर दर्गु , बाँदा (उ.प्र.), 01.12.2001,
3. केदारनाथ अग्रवाल का साहित्य, बाँदा (उ.प्र.), 01.04.2002,
4. शिक्षा में जीवन-मूल्य, विविध आयाम, बाँदा (उ.प्र.), 15,16.03.2002 (शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित महाविद्यालय स्तरीय संगोष्ठी),

5. रचना समग्र पुरस्कार (2001-2002), भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता (पश्चिम बंगाल), 23.03.2003,
6. निराला का व्यक्तित्व और कृतित्व, अतर्रा , बाँदा (उ.प्र.), 27.01.2004,
7. सूर साहित्य की उपयोगिता, बाँदा (उ.प्र.), 25.04.2004 (स्वायोजित),
8. तुलसी की प्रासंगिकता, फतेहपुर (उ.प्र.), 24.08.2004 (स्वायोजित),
9. सुभद्राकुमारी चौहान रू व्यक्ति त्व एवंकृति त्व, कानपुर (उ.प्र.), 10.10.2004,
10. डॉ. रामकुमार वर्मा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, बाँदा (उ.प्र.), 16.102004,
11. केदारनाथ अग्रवाल का काव्य, बाँदा (उ.प्र.), 01.04.2005,
12. विवेकानंद का महत्त्व, बाँदा (उ.प्र.), 12.01.2007,
13. केदार सम्मान 2006/2008, बाँदा (उ.प्र.), 23.09.2007/27.09.2008,
14. द्वितीय प्रेमचंद स्मृति सम्मान/सुमित्रा जिज्जी स्मृति सम्मान 2008, बाँदा (उ.प्र.), 28.09.2008,
15. 'देव स्मरण' पुस्तक विमोचन एवं गोष्ठी, बाँदा (उ.प्र.), 15.01.2009,
16. निराला: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, बाँदा (उ.प्र.), 07.02.2010 (स्वायोजित),
17. भवानी प्रसाद मिश्र: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, बाँदा (उ.प्र.), 07.03.2010,
18. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, बाँदा (उ.प्र.), 04.04.2010 (स्वायोजित),
19. महिला हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन, आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश), 03.07.2010 (मुख्य अतिथि),
20. तुलसी जयंती, बाँदा (उ.प्र.), 16.08.2010,
21. साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों का विमर्श, साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल, 02-03.01.2018,
22. बाँदा (उ.प्र.) से प्रकाशित 'नूतनवाग्धारा', अप्रैल-दिसंबर 2018 (केरल विशेषांक), ISSN：0976-092X का केरल के कालिकट विश्वविद्यालय में विमोचन, 09.11.2018,

23. पं.चंद्रशेखर शुक्ल के काव्य-संग्रह ‘शेखर शिखर’, मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.) से 2019 में प्रकाशित (ISBN:978-81-929060-9-6) के विमोचन-कार्यक्रम (30.09.2019) का संयोजन,
24. केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (मानद विश्वविद्यालय), लेह (लदाख) और अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान, लखनऊ (उ.प्र.) के तंयुक्त आयोजन में 15 अगस्त 2020 को आभासी पटल पर संपन्न अखिल भारतीय अनागत काव्य-गोष्ठी की अध्यक्षता,
25. अलबेले इक्कीस (इक्कीस में इक्कीस के इक्कीस अलबेलेरंग), मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.) से 2021 में प्रकाशित (ISBN:978-81-952531-8-0) के विमोचन-कार्यक्रम (31.12.2021) का आयोजन-संयोजन,
26. कथाकार महेंद्र भीष्म के जन्मदिन के अवसर पर समर्पयामि फाउंडेशन, लखनऊ द्वारा आयोजित कहानी-पाठ व परिचर्चा में मुख्य अतिथि, 05 फरवरी 2022,
27. 13 जुलाई 2022, गुरु पूर्णिमा को ‘तुलसी शोध संस्थान (जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल द्वारा संचालित), नयागाँव, चित्रकूट, जिला सतना-485334’ के आमंत्रण पर ‘रामकथा में गुरु-माहात्म्य’ विषय पर तुलसी शोध संस्थान, चित्रकूट के सभागार में व्याख्यान,
28. 04 अगस्त 2022, तुलसी जयंती पर अयोध्या शोध संस्थान द्वारा वित्तपोषित स्व-संयोजित और हिंदी विभाग एवं शोधकेंद्र, पं. जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय द्वारा आयोजित 'तुलसी के राम' विषय पर विद्यार्थियों हेतु भाषण प्रतियोगिता, विचारगोष्ठी, कविगोष्ठी और सारस्वत अतिथियों का सम्मान,
29. 13 अगस्त 2024, तुलसी जयंती पर उत्तर मध्य रेलवे द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता,

3.7.2 राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ

1. भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पंचायती राज व्यवस्था : मुद्दे और रणनीति, पं जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा (उ.प्र.), 02,03.03.2002, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,

2. आधुनिक हिंदी कविता की छायावादोत्तर काव्यधारा और नई कविता, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ.प्र.), 12,13.10.2002, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
3. अंग्रेजी के यथार्थवादी उपन्यासकार और यशपाल, आर्मापुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.), 20,21.09.2003, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
4. काव्य संवेदना : कल और आज, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक), 05,06,07.11.2004, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
5. हिंदी साहित्य का इतिहास और इसका पुनर्लेखन, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.), 22,23,24.05.2005 राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
6. जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाषा की भूमिका, महर्षि वेद विज्ञान कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.), 18,19.11.2005, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
7. हिंदी साहित्य पर बौद्ध प्रभाव तथा गौतम बुद्ध की समकालीन प्रासंगिकता, गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई (उ.प्र.), 01,02,03.12.2006, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
8. The Woman in Postcolonial Indo-Anglican Literature, श्यामाप्रसाद मुखर्जी राजकीय डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद, (उ.प्र.), 06,07.01.2007, राष्ट्रीय,
9. भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मानव विकास : मुद्दे, प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ, पं जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा (उ.प्र.), 24,25.03.2007, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
10. संवैधानिक लोकतंत्र एवं साहित्यकार की भूमिका, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.), 14.07.2007, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
11. दक्षिण भारत में हिंदी की दशा और दिशा, विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर (उ.प्र.), 02.02.2008, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
12. जनसंचार क्रांति में पत्रकारिता का योगदान, उपाधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीलीभीत (उ.प्र.), 21,22.12.2008, अंतरराष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित (तृतीय तकनीकी सत्र 'जनसंचार की भाषा' की अध्यक्षता),

13. बदलते भारतीय सामाजिक संदर्भ और साहित्य की चुनौतियाँ, शासकीय चंद्रविजय महाविद्यालय, डिण्डौरी (म.प्र.), 31.01.2009-01.02.2009, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
14. दिनकर: व्यक्तित्व और कृतित्व, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना (म.प्र.), 21,22.02.2010, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित (विषय-प्रवर्तक),
15. वैश्वीकरण एवं मूल्यबोध, शासकीय स्वायत्तशाषी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.), 28,29.03.2010, राष्ट्रीय, उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश द्वारा प्रायोजित,
16. भारतीय लोकतंत्र तथा हिंदी साहित्य, कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.), 19,20,21.10.2010, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
17. सूचना तकनीक एवं हिंदी पत्रकारिता, महाराजा हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.), 14,15.11.2010, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित (प्रथम तकनीकी सत्र ‘‘हिंदी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियाँ’’ की अध्यक्षता),
18. नई सदी के पहले दशक का तनाव : समय, समाज और संवेदना, गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई (उ.प्र.), 01,02.10.2011, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
19. अज्ञेय और हिंदी साहित्य, जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, पासीघाट (अरुणाचल प्रदेश), 11,12.10.2011, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित (तीसरे तकनीकी सत्र के प्रतिवेदक की भूमिका भी निभाई),
20. नई सदी में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, 15,16.10.2011, अंतरराष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
21. भारतीय महिला लेखन, ना. दा. ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई (महाराष्ट्र), 03,04.02.2012, राष्ट्रीय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के तत्वाधान में,
22. साठोत्तरी हिंदी नाटक : विविध आयाम, कुवेंपु विश्वविद्यालय, शंकरघट्ट, शिवमोग्गा (कर्नाटक), 06,07.02.2012, राष्ट्रीय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र के तत्वाधान में, (दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता एवं समापन-सत्र में मुख्य अतिथि),

23. 21वीं सदी की चुनौतियाँ : मीडिया और साहित्य, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान), 25,26.02.2012, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित, (दूसरे तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता),
24. शोध का स्तरीकरण- समस्या और समाधान, हिंदुस्तानी साहित्य अकादमी, इलाहाबाद, (उ.प्र.), 27.03.2012, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
25. अज्ञेय : प्रदेय और वैशिष्ट्य, कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.), 24,25,26.09.2012, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित (दूसरे तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में),
26. ज्ञानपीठ पुरस्कृत श्री अमरकांत और श्रीलाल शुक्ल के साहित्यिक अवदान, कुवेंपु विश्वविद्यालय, शंकरघट्ट, शिवमोग्गा (कर्नाटक), 06,11.2012, राष्ट्रीय, (मुख्य अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में),
27. 21वीं सदी का बदलता परिवेश एवं हाशिए का समाज, श्री अग्रसेन महाविद्यालय, मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.), 08,09.02.2013, राष्ट्रीय, राज्य सरकार द्वारा संपोषित (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
28. राम-साहित्य का वैश्विक संदर्भ, एम.टी.बी. आर्ट्स कॉलेज, सूरत (गुजरात), 23,24.02.2013, अंतरराष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान तथा अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, संस्कृति विभाग, उत्तरप्रदेश के सहयोग से ("हिंदीतर राज्यों का हिंदी लेखन अथवा वर्तमान संदर्भ में राम-साहित्य की प्रासंगिकता" विषयक समानांतर संगोष्ठी के विशेषज्ञ-संचालक के रूप में),
29. सूचना तकनीक एवं हिंदी पत्रकारिता, जवाहरलाल नेहरू स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाराबंकी (उ.प्र.), 24,25.04.2013, राष्ट्रीय, राज्य सरकार द्वारा संपोषित (दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता),
30. राष्ट्रीय एकता में हिंदी भाषा और नागरी लिपि की भूमिका, राष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मेलन, पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग (मेघालय), 24-26.05.2013, राष्ट्रीय,
31. साहित्य का सामाजिक सरोकार और संस्कृति का वैश्विक परिप्रेक्ष्य, पं. शंभूनाथ शुक्ल शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शहडोल (म.प्र.), 26-28.10.2013, अंतरराष्ट्रीय, भारतीय हिंदी

परिषद के तत्वाधान तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (संयुक्त राज्य अमेरिका) के सहयोग से (आमंत्रित वक्ता के रूप में),

32. पौराणिक-ऐतिहासिक संदर्भों में बुंदेलखंड में भक्ति-साहित्य का विकास, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, 03,04.12.2013, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में (आमंत्रित मुख्य वक्ता के रूप में),
33. श्रीकृष्ण ‘सरल’ के काव्य की आधुनिकता, शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, गुना (म.प्र.), 28,29.12.2013, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित (विशिष्ट अतिथि व समापन सत्र के संचालक के रूप में),
34. वैश्वीकरण का परिप्रेक्ष्य और हिंदी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा आयोजित, 08,09.08.2014, राष्ट्रीय, (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
35. समकालीन हिंदी साहित्य में पुराण की प्रस्तुति, कुवेंपु विश्वविद्यालय, शंकरघट्ट, शिवमोग्गा (कर्नाटक), 12,13.02.2015, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित, (संगोष्ठी-उद्घाटक एवं विषय विशेषज्ञ),
36. ग्रामीण सामाजिक संरचना और परिवर्तन, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट (उ.प्र.), 22,23.02.2015, राष्ट्रीय, राज्य सरकार द्वारा संपोषित (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
37. प्रवासी हिंदी साहित्य में आधुनिकता बोध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 12,13.12.2015, अंतरराष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में,
38. हिंदी शोध के प्रयोजनमूलक तथा तकनीकी क्षेत्र : प्रविधि तथा स्तरीकरण के लिए सुझाव, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 27, 28.02.2016, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, राष्ट्रीय, (आमंत्रित वक्ता के रूप में),

39. बुंदेलखंड की काव्य-परंपरा और भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में वर्णित वृहद बुंदेलखंड का लोक-प्रकृत्यालोक, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), 29,30.03.2016, राष्ट्रीय, वि. अ. आयोग द्वारा प्रायोजित,
40. आचार्य नगेंद्र की आलोचना-दृष्टि (आलोचना और डॉ. नगेंद्र), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से हिंदी विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) द्वारा आयोजित, 21-22.05.2016, राष्ट्रीय, (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
41. 10-11 सितंबर 2016 को भारतीय हिंदी परिषद की प्रेरणास्वरूप केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के वित्तीय सहयोग से अपने महाविद्यालय (पं. जवाहरलाल नेहरु महाविद्यालय, बाँदा, उ.प्र.) में 'पाठालोचन की प्रविधि : समस्याएँ और संभावनाएँ' विषय पर भव्य-वृहद राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित (उत्तर प्रदेश सहित उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, मेघालय, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों के विद्वान शामिल),
42. भाषा कौशल, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा आयोजित, 01 जुलाई 2017, राष्ट्रीय (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
43. साहित्य और मीडिया: वर्तमान संदर्भ, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला के सहयोग से 07-09.09.2017, अंतरराष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में ("इलेक्ट्रॉनिक साहित्य" विषयक समानांतर संगोष्ठी के विषय-प्रवर्तक के रूप में),
44. अंतरराष्ट्रीय साहित्य-संवाद, साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल, 20-21.02.2018, अंतरराष्ट्रीय, (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
45. भाषा और साहित्य के बदलते आयाम, हिंदी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, कालिकट (केरल), 13-15.03.2018, अंतरराष्ट्रीय, (आमंत्रित विषय विशेषज्ञ के रूप में),
46. हिंदी साहित्य का सामाजिक सरोकार, पय्यन्नूर कॉलेज, पय्यन्नूर, जनपद-कन्नूर (केरल), 15-16.03.2018, राष्ट्रीय, (संगोष्ठी-उद्घाटक एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में),

47. पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी और नागरी लिपि का प्रोन्नयन, राष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मेलन, पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग (मेघालय), 25-27.05.2018, राष्ट्रीय (अध्यक्षता),
48. महाकाव्यात्मक प्रतिभा मैथिलीशरण गुप्त, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), 03-04.08.2018, राष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में (आमंत्रित विशिष्ट वक्ता के रूप में),
49. इक्कीसवीं सदी की कथेतर गद्य विधाएँ : दशा, दिशा और संभावनाएँ, बी.के. बिरला कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, कल्याण (भारतीय हिंदी परिषद, प्रयागराज, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ और सेंचुरी रेयॉन, शहाड़ द्वारा प्रायोजित), 07-08.12.2018, अंतरराष्ट्रीय (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
50. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की 156वीं जन्मतिथि पर ई-परिचर्चा गोष्ठी (वेबिनार), आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी स्मारक समिति, रायबरेली (उ.प्र.), 10.05.2020, राष्ट्रीय (आमंत्रित विशिष्ट वक्ता के रूप में),
51. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं भारत राष्ट्र : चुनौतियाँ, संभावनाएँ और भूमिका (वेबिनार), शोध-धारा शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई, जालौन (उ.प्र.), 15-17.05.2020, अंतरराष्ट्रीय (तकनीकी सत्र की अध्यक्षता),
52. शिक्षा, साहित्य और संस्कृति : जीवन मूल्य (वेबिनार), अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्यास, जोधपुर प्रांत, 06-07.06.2020, अंतरराष्ट्रीय (आमंत्रित वक्ता के रूप में),
53. आधुनिक हिंदी काव्य में अनागत परंपरा, अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्यास, लदाख प्रांत और साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ त्रैमासिक पत्रिका 'नूतनवाग्धारा' के संयुक्त तत्त्वाधान में, 22.06.2020, अंतरराष्ट्रीय (विषय प्रवर्तक),
54. देश-विदेश में हिंदी : दिशाएँ व संभावनाएँ (वेबिनार), ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा उत्सव, 23.09.2020, अंतरराष्ट्रीय (आमंत्रित वक्ता),

55. हिंदी साहित्य में महात्मा गाँधी : व्यक्ति और विचार (वेबिनार), केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (मानद विश्वविद्यालय), लेह (लदाख) और साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ त्रैमासिक पत्रिका 'नूतनवाग्धारा', 02.10.2020, अंतरराष्ट्रीय (वेबिनार अवधारणा सर्जक),
56. बृजभाषा का माधुर्य, विश्व हिंदी मंच, आचार्य पं. श्री नरोत्तमलाल संस्थान, संस्कार भारती और वृंदावन शोध संस्थान वृंदावन (उ.प्र.) का संयुक्त आयोजन, 07.03.2021, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (तकनीकी सत्र की अध्यक्षता), (उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रायोजित),
57. संवाद-संदर्भ (बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ) (वेबिनार), साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ त्रैमासिक पत्रिका 'नूतनवाग्धारा', 10.04.2021, राष्ट्रीय (अध्यक्षता),
58. 'कुसुमांजलि' कविता-संग्रह का विमोचन और ई-परिचर्चा (आभासी पटल पर) (वेबिनार), अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान, लखनऊ (उ.प्र.) और साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ त्रैमासिक पत्रिका 'नूतनवाग्धारा', 20.06.2021, राष्ट्रीय (विमोचक और आमंत्रित वक्ता),
59. हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ : अंतस्संबंध और वैशिष्ट्य, हिंदी स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध विभाग, महाराजा हरिश्चंद्र पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद (उ.प्र.), 20.06.2021, राष्ट्रीय संगोष्ठी (विषय-प्रवर्तक),
60. भारतीय स्वतंत्रता-आंदोलन में अगस्त-क्रांति की हलचल (वेबिनार), राजकीय स्वायत्त महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर (म.प्र.), 11.09.2021, राष्ट्रीय (आमंत्रित वक्ता),
61. रामकथा में गुरु-माहात्म्य, तुलसी शोध संस्थान, नयागाँव, चित्रकूट, जिला-सतना-485334 (जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल द्वारा संचालित, 13.07.2022, राष्ट्रीय, (मुख्य वक्ता),
62. हिंदी एवं हिंदीतर उत्तर क्षेत्र की भाषाएँ और साहित्य (पंजाबी, कश्मीरी, डोगरी) कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव, 19-20.03.2023, अंतरराष्ट्रीय, भारतीय हिंदी परिषद के तत्वाधान में (मुख्य वक्ता के रूप में),

63. साहित्य में प्रेम और सद्भावना के प्रसंग, जनकपुर (नेपाल) में पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग द्वारा आयोजित, 22-24 सितंबर 2023, अंतरराष्ट्रीय (अध्यक्षता),
64. Innovative Practices for Quality Enhancement in Higher Education, Department of Higher Education, Govt. Of Uttar Pradesh & U.P. State Higher Education Council, 30 September 2013,
65. NAAC: Assessment And Accreditation Process, Regional Higher Education Office, Jhansi & Chitrakoot Dham (Department of Higher Education Uttar Pradesh), 07 December 2016,
66. Capacity Building for IQAC In Higher Education, Department of Higher Education, Govt. Of Uttar Pradesh & U.P. State Higher Education Council, 25 March 2017,
67. NAAC: Assessment And Accreditation Process, Regional Higher Education Office, Jhansi & Chitrakoot Dham (Department of Higher Education Uttar Pradesh, Prayagraj), 12 December 2018,
68. अनेक स्वायोजित।

3.8 हिंदी प्रचार-प्रसार समिति में योगदान

1. कार्यकारिणी सदस्य/आजीवन सदस्य, भारतीय हिंदी परिषद, इलाहाबाद (उ.प्र.),
2. आजीवन सदस्य, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)।
3. आजीवन सदस्य, भारतीय सांस्कृतिक निधि, नई दिल्ली।
4. पूर्व प्रभारी, हिंदी साहित्य परिषद, हनुमानगढ़ (राजस्थान)।
5. पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय नवोदित साहित्यकार परिषद, बाँदा (उ.प्र.)।
6. संयोजक, संकल्पक्रम, बाँदा (उ.प्र.)।

7. सलाहकार, नरेश मिश्र रचनावली (11 खंडों में)-संपादन/प्रकाशन, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2014, ISBN: 978-81-86400-276-1.
8. संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश शासन (आधार तल, संस्कृति भवन, बाणगंगा, भोपाल-462003, मध्यप्रदेश) द्वारा 30.08.2018 को संपन्न हिंदी भाषा सम्मान की चयन समिति (ज्यूरी) की आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.) में बैठक में सदस्य के रूप में प्रतिभाग।
9. आमंत्रित सदस्य, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी स्मृति अभियान, रजत जयंती समारोह राष्ट्रीय आयोजन समिति।
10. साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति, हैदराबाद द्वारा महिला लेखिकाओं के उपन्यासों हेतु प्रदत्त साहित्य गरिमा पुरस्कार, 2023 के निर्णायक ।

3.9 कार्यशालाएँ

1. मानविकी तथा समाज विज्ञान की शब्दावली, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई (महाराष्ट्र), 09-10.07.2006, राष्ट्रीय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वाधान में,
2. तकनीकी शब्दावली, गन्ना उत्पादक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बहेड़ी, बरेली (उ.प्र.), 25-26.04.2009 राष्ट्रीय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वाधान में,
3. कुछेक भारतीय वायुसेना में रहते हुए और अन्य अनेक स्वायोजित ।

3.10 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में आमंत्रित व्याख्यान

1. वि.अ.आ.-मानव संसाधन विकास केंद्र, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा, 16-17 जुलाई 2018,
2. वि.अ.आ.-मानव संसाधन विकास केंद्र, कालिकट विश्वविद्यालय, कालिकट, 10 नवंबर 2018 ।

3.11 आकाशवाणी से जुड़ाव

1. आकाशवाणी के जोधपुर (राजस्थान) केंद्र से 'आधुनिक भारत और गाँधी' (30.01.1999) एवं 'शील के काव्य में आम आदमी' (18.05.1999) रेडियो वार्ताएँ प्रसारित तथा सुमित्रानंदन पंत पर प्रसारित रूपक में समीक्षकीय टिप्पणी,

2. आकाशवाणी के छतरपुर (मध्यप्रदेश) केंद्र से प्रसारित 'हिंदी में सार्थक लेखन: वर्तमान स्थिति और भविष्य का चिंतन' विषयक परिचर्चा का संचालन समीक्षकीय टिप्पणियों के साथ (22.09.2018),
3. आकाशवाणी के छतरपुर (मध्यप्रदेश) केंद्र से प्रसारित 'साकेत में ललितकला.संदर्भ: एक अनूठी आलोचना' विषयक समीक्षा का प्रसारण (08.03.2019),
4. आकाशवाणी के छतरपुर (मध्यप्रदेश) केंद्र से प्रसारित 'समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण.चिंतन' विषयक वार्ता का प्रसारण (28.07.2019)।

3.12 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के शैक्षिक विचार

3.12.1 आदर्श शिक्षा

प्रो. शुक्ल जी का मानना है कि नागरिकों को जागरूक और विवेकशील बनाने की आवश्यकता है, जब तक नागरिकों में अच्छाई-बुराई में भेद करने की विवेक शक्ति न होगी तब तक न तो वे अपने समाज में बुराइयों को दूर कर सकेंगे और न उनमें अच्छाइयों का विकास कर सकेंगे। उनके अनुसार, यदि सच पूछा जाए, तो इस समय हमारे भारतीय समाज में सबसे बड़ी कमी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा की है। इस कमी को दूर करने के लिए नैतिकता एवं चरित्र के आधार आदर्शों और मूल्यों के निर्माण का प्रयास हमें शिशुकाल से ही करना होगा और शिक्षा के किसी भी स्तर पर जारी रखना होगा। मूल्य हमारे व्यवहार के निर्देशक और नियंत्रक होते हैं। यदि हम अपने आने वाली पीढ़ी में उच्च मूल्यों का निर्माण कर सकें, तो फिर समझिए समाज में बुराई नाम की कोई चीज नहीं रहेगी।

3.12.2 सुसंस्कारों की शिक्षा

प्रो. शुक्ल जी का कहना है कि आजकल तो संस्कार की परिभाषा ही बदल रही है। आधुनिकता के इस युग में अधिकांश माता-पिता इतने व्यस्त हो गए हैं कि उनके पास बच्चों के साथ वक्त बिताने का समय नहीं है और अगर है भी, तो वे इसे गंभीरता से नहीं लेते, यही वजह है कि बच्चों में संस्कार की कमी होती जा रही है। परिवार ही बच्चों की पहली पाठशाला है और माता-पिता बच्चे के शिक्षक हैं। बच्चे ही देश के भविष्य हैं और इन्हीं पर हमारे देश व समाज का विकास टिका है। अच्छे संस्कारों से ही शिक्षा पल्लवित होगी। वर्तमान समय में यह महसूस किया जा रहा है कि जैसे-जैसे शिक्षित नागरिकों का प्रतिशत बढ़ रहा है, वैसे-वैसे सामाजिक

संस्कारों में गिरावट आती जा रही है। हमें संस्कारों की महत्ता का बोध होना चाहिए और बच्चों को भी इसकी जानकारी देनी चाहिए।

विद्यार्थी जो देश का भविष्य हैं, वे तनाव, अवसाद, बाह्य आकर्षण और अनुशासनहीनता के शिकार हैं। इसका कारण पाश्चात्य संस्कृति, विद्यालय या समाज ही नहीं, बल्कि संस्कारों के प्रति हमारी उदासीनता है। अत: परिवार में प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि बच्चों में भौतिक संसाधनों के साथ ही संस्कारों की सौगात भी दें। बच्चों को संस्कारी बनाने की पहली सीढ़ी घर है और उनमें यहीं से संस्कार डाले जा सकते हैं, अन्यथा बड़े होने पर इसकी कोई गुंजाइश नहीं रहती। सबसे जरूरी है कि अपने बच्चे को सुबह उठकर घर के बड़े सदस्यों के पैर छूने की आदत डालें,क्योंकि संस्कारों की शुरुआत यहीं से होती है। अगर घर में आपसे बड़ा कोई सदस्य है, तो स्वयं पर भी इस नियम को लागू करें, क्योंकि व्यावहारिकता ज्ञान से अधिक प्रभावी होती है, चाहे वह बच्चों पर हो या फिर बड़ों पर, तो इसे अपनाने में तनिक भी देरी न करें।

3.12.3 जन-जन को शिक्षा

प्रो. शुक्ल जी का यह भी मानना है कि हमारी जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी निरक्षर है और हमारी निरक्षरता ही प्रगति की दौड़ में हमारे पीछे रहने का एक प्रमुख कारण है। हमारे कामगार, किसान व कुछ अन्य वर्गों के व्यक्ति निर्धनता के कारण शिक्षा की ओर अपना ध्यान आकृष्ट नहीं कर पा रहे हैं। कुछ लोग किसी समस्या के चलते इस अभियान में भाग नहीं ले पाते हैं। अन्य लोगों में पढ़ाई के नाम पर ही अरुचि का भाव होता है। शिक्षा उन्हें सुनने में ही अच्छी लगती है, परंतु वे इसमें रुचि नहीं दिखाते हैं। अपने पास वित्तीय संसाधनों की कमी भी इस अभियान की असफलता का प्रमुख कारण बनती है। लाखों की संख्या में शिक्षित लोग बेरोजगार हैं, उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ रही हैं। इन परिस्थितियों में अशिक्षितों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों को धक्का पहुँचता है।

उनका कहना है कि अपना देश विकास की दौड़ में अग्रणी देशों में तब तक सम्मिलित नहीं हो सकता, जब तक कि देश में लोग निरक्षर बने रहेंगे। यदि हम विकसित देशों की ओर देखें, तो हम पाएँगे कि वहाँ शिक्षा का प्रचार-प्रसार अधिक है। वहाँ अधिकांश लोग शिक्षित हैं, जिसके कारण ही वे हमसे बहुत आगे हैं। अपने देश के कई छोटे-छोटे राज्य पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य के करीब हैं, लेकिन अधिकांश बड़े राज्यों में स्थिति

चिंताजनक कही जा सकती है। अशिक्षा के कारण लोगों में अपने परिवेश, अपने समाज और अपने राष्ट्र के प्रति उचित समझदारी नहीं आ पाती है। निरक्षर लोग लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों को समझने में असमर्थ होते हैं। अत: सर्वशिक्षा जैसे अभियान अपने राष्ट्र के विकास के लिए स्वयं में एक अनिवार्यता हैं।

3.12.4 व्यक्तित्व का विकास

प्रो. शुक्ल जी अपने विद्यार्थियों से प्रायः कहते हैं कि हर व्यक्ति जन्म से अनूठा होता है, सभी में कुछ ऐसा विशेष होता है, जो उसे औरों से अलग करता है। यही विशेषता तय करती है कि वह कौन है और किसी परिस्थिति में किस तरह का व्यवहार करेगा। ज्यादातर समय हम अपनी उन विशेषताओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं, जो हमें नुकसान पहुँचाती हैं और फिर स्वयं को कमतर आँकने लगते हैं। हालाँकि, हम यह जानते हैं कि हर कोई अपने आप में अनूठा है, बस आवश्यकता है, तो अपने भीतर सोई हुई आकांक्षाओं को जगाने की और अपने व्यक्तित्व को निखारने की। यहीं पर व्यक्तित्व-विकास की प्रक्रियाएँ/तकनीकें मददगार होती हैं। व्यक्तित्व-विकास के द्वारा एक जड़ता और अरुचि की अवस्था में फँसा व्यक्ति, उत्साही, प्रसन्न और लक्ष्य की ओर प्रेरित व्यक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाता है। व्यक्तित्व-विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति अपने अनूठेपन को बिना किसी हिचकिचाहट और सीमाओं के बंधन के साझा करना सीखता है, खुशी मनाना सीखता है और यह सब अधिक उत्साह व चैतन्यता के साथ होता है।

व्यक्तित्व-विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि व्यक्ति के अंदर किताबी ज्ञान न होकर व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। किताबी ज्ञान सिर्फ लिखित परीक्षा में काम आता है, जबकि व्यावहारिक ज्ञान जीवन की हर कठिन परिस्थिति में काम आता है। व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अच्छे मित्र बनाने चाहिए, अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। जिन लोगों का व्यावहारिक ज्ञान अच्छा होता है, उनका व्यक्तित्व-विकास स्वतः हो जाता है।

3.12.5 कर्त्तव्यों की शिक्षा

प्रो. शुक्ल जी की सोच के अनुसार व्यक्ति का यथाशक्ति और आवश्यकतानुसार कार्य करना ही उसका कर्त्तव्यपालन कहलाता है। मानव जीवन कर्त्तव्यों का भंडार है। उसके कर्त्तव्य उसकी अवस्थानुसार छोटे और

बड़े होते हैं। इनको पूर्ण करने से जीवन में उल्लास होता है, आत्मिक शांति मिलती है और यश की वर्षा होती है।

बचपन में माता-पिता तथा परिजनों की आज्ञा मानना ही बच्चों का कर्त्तव्य कहलाता है। विद्यार्थी जीवन में गुरुओं की आज्ञा का पालन-अनुपालन उनका कर्त्तव्य बन जाता है। युवावस्था में उनके कर्त्तव्य परिजनों, पड़ोसियों के अतिरिक्त राष्ट्र के प्रति भी हो जाते हैं, उसके कंधों पर समाज और राष्ट्र की उन्नति का भार आ पड़ता है, उसे स्वयं या अन्य कृपालु व्यक्तियों के द्वारा अशिक्षितों के लिए विद्यालय, प्रौढ़ शिक्षालय, समाज-सेवा के केंद्र, रोगियों के लिए अस्पताल आदि खुलवाने पड़ते हैं। उसे देश की कारीगरी, कला-कौशल और व्यापार की उन्नति में भागीदारी करनी पड़ती है। उसका जीवन सदा त्याग, तपस्या और सेवा-भाव में लिप्त रहता है।

जिस प्रकार प्रत्येक शासक का कर्त्तव्य अपने शासितों की रक्षा करना होता है, उसी प्रकार शासितों का कर्त्तव्य शासक की मंगलकामना करना होता है। शिक्षक का कर्त्तव्य अपने छात्रों के हृदय पर से अज्ञानता का आवरण हटाकर उन्हें आदर्शवादी बनाना होता है। ये सब ही मानव के कर्त्तव्य हैं। इनको पूर्ण करने के लिए उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अपने कर्त्तव्य का पालन करने में उसको उसकी प्राकृतिक शक्तियाँ पूर्ण सहयोगी देती हैं। इसके बाद भी जो अपने कर्त्तव्य के पथ से विचलित हो जाता है, उसका समाज में निरादर होता है और वह अपयश का भागीदार होता है। जो मानव लज्जा, भय, निंदा और विघ्नों की चिंता न करके अपने कर्त्तव्यपालन पर दृढ़ रहता है, वह अपने जीवन में सफल होता है।

कर्त्तव्यपालन करने वाले व्यक्ति का अंत:करण स्वच्छ और सरल हो जाता है। वह साहसी और निर्भीक हो जाता है। उसके जीवन में उत्साह और आकांक्षाओं की लहरें किल्लोलें मारने लगती हैं। उसके शत्रु उससे कोसों दूर भाग जाते हैं। उसकी विघ्न-बाधाएँ उसके मार्ग को छोड़ देती हैं। उसका सम्मान सर्वत्र होता है। वह महापुरुषों के रूप में पूजा जाता है। उसकी शक्ति पर लोगों को विश्वास होता है। पन्ना धाय ने अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए अपने एकमात्र पुत्र का बलिदान कर दिया था, फिर भी वह प्रसन्न थी, क्योंकि वह कर्त्तव्यपालन के वशीभूत थी।

3.12.6 कर्म की शिक्षा

प्रो. शुक्ल जी 'श्रीमद्भगवद्गीता' पर आस्था व विश्वास रखते हैं, इसीलिए वे कहते हैं कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। वस्तुत: मनुष्य के द्वारा किया गया कर्म ही प्रारब्ध बनता है। इसे यूँ समझें कि किसान जो बीज खेत में बोता है, उसे ही फसल के रूप में वह बाद में काटता है। भगवान श्रीकृष्ण 'गीता' में स्वयं कहते हैं कि कोई भी मनुष्य क्षणभर भी कर्म किए बगैर नहीं रह सकता है। आज के परिवेश में विचार किए जाने की आवश्यकता यह है कि क्या हम क्षण-प्रतिक्षण, दिन-प्रतिदिन जो कर्म कर रहे हैं, वे हमें जीवन में ऊँचाई की तरफ ले जा रहे हैं या फिर इस संदर्भ में कहीं लापरवाही हमें नीचे तो नहीं गिरा रही है? हम अच्छे कर्मों के सहारे स्वर्ग में जा सकते हैं और बुरे के द्वारा नरक में। मानव के पास ही प्रभु ने शक्ति प्रदान की है कि अपने अच्छे कर्मों के सहारे वह जीवन नैया को पार लगा सके।

वे आगे बताते हैं कि परमात्मा का हिसाब बिल्कुल साफ है। अच्छे कर्मों का फल शुभ व बुरे का फल अशुभ। वह कभी ऐसा जोड़-घटाना नहीं करता है कि अच्छे कर्मो में से बुरे का फल निकालकर दे दे। जो जैसा करता है, उसे वैसा ही भोगना पड़ता है। यदि ऐसा नहीं होता, तो श्रीराम भगवान होकर पिता दशरथ को बचा लेते, श्रीकृष्ण अभिमन्यु को बचा लेते, पर ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि सबको अपने किए हुए शुभ या अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। अच्छे फल की प्राप्ति के लिए हम अच्छे कर्मों को करने के लिए प्रतिबद्ध हों, तो बात बनती है। हम अच्छे कर्म करते नहीं और अपेक्षा अच्छाई की करते हैं। यदि हम थोड़ा-सा सजग व सेवारत हो जाएँ, तो बात बनते देर नहीं लगेगी। अच्छे कर्मों से यदि स्वर्ग मिल भी जाए, तो उसे स्थाई नहीं समझना चाहिए। स्वर्ग का सुख-ऐश्वर्य भोगने के पश्चात् इंद्र जैसे देवता को भी अच्छे कर्मों के अभाव में प्रायश्चित करना पड़ता है। प्रभुकृपा से जीवन में यदि सत्ता, संपत्ति व सत्कार मिले, तो उसे बचाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने अच्छे कर्मों में बढ़ोत्तरी करें, जीवन के सच्चे मूल्य को समझें। प्रभुप्राप्ति में जो कर्म सहायक हों, उन्हें ही करने का प्रयास करें। प्रभु को अपने से ज्यादा उसके बनाए गए नियम प्रिय हैं। जो नियमों में बँधकर जीवनयापन करता है, वह लक्ष्य की प्राप्ति निस्संदेह करता है। कर्म को यदि हम पूजा बना लें, तो बंधन से मुक्ति भी संभव है।

वे कहते हैं कि संपूर्ण जीवन एक संघर्ष है और हमें जीवन की लड़ाई जीतने के लिए अपनी कड़ी मेहनत के माध्यम से चौकस रहना होगा। मृत्यु शाश्वत है, इसलिए अपने जीवन को सबसे बेहतर तरीके से चलाने के लिए हमको अपने कर्म के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। समय किसी का इंतजार नहीं करता है, इसलिए अपने हर क्षण को उपयोगी बनाना चाहिए। हमारा जीवन विभिन्न घटनाओं और कार्यों से भरा हुआ है। वे लोग धन्य हैं, जो अपना काम समय पर पूरा करते हैं। हालाँकि, जो लोग ऐसा नहीं करते हैं या फिर अपने कार्य को करने में संकोच या आलस्य करते हैं, वे जीवन में कुछ भी हासिल नहीं करते हैं। आलसी लोग कभी भी गौरव की ऊँचाइयों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं, जबकि सक्रिय लोग बहुत ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं। अपने कर्म को पूजा मानते हुए सभी को कड़ी मेहनत में व्यस्त रहने की कोशिश करनी चाहिए। कर्म जीवन में अर्थ जोड़ता है और आत्मविश्वास और मोक्ष लाता है।

3.12.7 स्त्री शिक्षा

प्रो. शुक्ल जी के विचार बड़े सात्विक हैं। उनके अनुसार भारतीय समाज के सही आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी को शिक्षित करना बेहद जरूरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तरह से साइकिल का संतुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है, उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुष और महिला के कंधों पर आश्रित है। दोनों ही देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं, इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का अधिकार मिलना जरूरी है। अगर इन दोनों में से किसी एक की शिक्षा का स्तर गिरा, तो समाज की प्रगति होना नामुमकिन है। नारी को समाज में उसका उचित स्थान दिलवाने के लिए एक ओर राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महान समाज-सुधारकों ने बहुत प्रयत्न किए, परंतु फिर भी जीवन के हर क्षेत्र में उसके साथ भेदभाव आज भी हो रहा है। शैक्षणिक स्तर पर आज भी समाज में किसी न किसी रूप में नारी का शोषण हो रहा है। महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार और छेड़छाड़, घरों, सड़कों, बगीचों, कार्यालयों सभी स्थानों पर आम बात हो गई है। बलात्कार, दहेज उत्पीड़न, हत्या आदि के जो मामले प्रकाश में आते हैं, उनमें से अधिकांश सबूतों के अभाव से टूट जाते हैं। बाल-विवाह की त्रासदी अनेक कन्याएँ भोग रही हैं। वास्तविकता यह है कि एक शिक्षित नारी ही अपने परिवार की अशिक्षित नारियों को पढ़ाकर अपने अर्जित ज्ञान व विकसित क्षमता का लाभ पूरे परिवार को दे सकती है। नारी

सशक्तीकरण की आधारशिला भी शिक्षा ही है। शिक्षा द्वारा नारी सशक्त और आत्मनिर्भर बनकर अपने व्यक्तित्व का उचित रूप से विकास कर सकती है, परंतु महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासीनता, सामाजिक कुरीतियाँ तथा पुरुषों का महिलाओं पर प्रभुत्व आदि इसमें मुख्य बाधाएँ हैं। इन सभी समस्याओं से निजात दिलवाने का एक मात्र साधन शिक्षा ही है, इसलिए समाज के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्तर पर यह महसूस किया जा रहा है कि नारी शिक्षा की दिशा में ठोस प्रयास के बिना समाज का संतुलित विकास संभव नहीं है। इसलिए नारी-शिक्षा की दिशा में लगातार प्रयास किया जा रहा है। आज भारत में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय चलाए जा रहे हैं। महिलाओं को शिक्षित बनाने का वास्तविक अर्थ उसे प्रगतिशील और सभ्य बनाना है, ताकि उसमें तर्क-शक्ति का विकास हो सके। यदि नारी शिक्षित होगी, तो वह अपने परिवार की व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह से चला सकेगी। एक अशिक्षित नारी न तो स्वयं का विकास कर सकती है और न ही परिवार के विकास में सहयोग दे सकती है। शैक्षणिक स्तर पर कन्या-शिक्षा की सदैव से ही उपेक्षा की जाती रही है व उसे केवल घरेलू कामकाजों को सीखने तथा पुत्र-संतान को जन्म देने के संदर्भ में ही प्रोत्साहित किया जाता है। उसे भारतीय प्राचीन संस्कृति की स्वस्थ और अच्छी परंपराओं के आलोक में आधुनिकता से जोड़कर सही मायने में शिक्षित करने पर ही शोषण व अत्याचारों के चक्रव्यूह से मुक्ति दिलाई जा सकेगी।

3.12.8 अनिवार्य योग शिक्षा

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी कर्मयोगी ही नहीं, सही मायने में योगी भी हैं, क्योंकि योग उनकी दिनचर्या का अंग है, इसीलिए उनका अभिमत है कि जिस तरह शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है, ठीक उसी तरह योग के बिना अच्छे स्वास्थ्य की कल्पना भी बेकार है। वैज्ञानिक अविष्कारों के इस युग में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए असंख्य संसाधन मौजूद हैं, लेकिन क्या ये साधन सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध हैं, नहीं, क्योंकि ये महँगे हैं, जिनका लाभ कुछ लोग ही उठा पाते हैं। दूसरी ओर योग सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है, इसमें किसी भी तरह का कोई खर्च नहीं है। योग का लाभ और आनंद सभी के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। इसके लिए सही तरह से योग को सीखने की जरूरत होती है। शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित

करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योगासन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाने जाते हैं।

विद्यार्थियों के लिए योग बहुत ही लाभदायक माना गया है, क्योंकि इससे उनके मन-मस्तिष्क में स्थिरता आती है। शिक्षार्थियों को अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करने में भी योग से सहायता मिलती है। योग के चमत्कार को तो पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है, इसीलिए दुनिया के अधिकांश देशों में योग की शिक्षा को अनिवार्य किया गया है।

योग के लाभ निम्नांकित हैं–

- योग से मांसपेशियों के लचीलेपन में सुधार होता है।
- योग शरीर की मुद्राओं और संरेखण (एलाइनमेंट) को ठीक करता है।
- योग पाचनतंत्र को बेहतर बनाता है।
- योग आंतरिक अंग मजबूत करता है।
- योग अस्थमा का इलाज करता है।
- योग मधुमेह का इलाज करता है।
- योग दिल से संबंधित समस्याओं का इलाज करने में मदद करता है।
- योग त्वचा को चमकाने में मदद करता है।
- योग शक्ति और सहनशक्ति को बढ़ावा देता है।
- नियमित योग करने से एकाग्रता में सुधार होता है।
- योग मन और विचार नियंत्रण में मदद करता है।
- योग चिंता, तनाव और अवसाद पर काबू पाने के लिए मन को शांत रखता है।

- योग तनावऔर थकान कम करने में मदद करता है।
- योग से रक्त परिसंचरण और मांसपेशियों के विश्राम में सहायता मिलती है।
- योग करने से वजन घटता है।
- योग चोट से संरक्षण करता है।

ये सब योग के लाभ हैं। कुल मिलाकर योग स्वास्थ्य और आत्म-चिकित्सा के प्रति आपकी प्राकृतिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखता है।

3. 13 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के द्वारा संपादित पत्रिकाएँ

- ❖ वाग्धारा (शोध, साहित्य और भाषा की अर्द्धवार्षिकी), जनवरी 2008 से जुलाई 2008 तक, दो अंक प्रकाशित, बाँदा (उ.प्र.),
- ❖ नूतनवाग्प्रवाह (शोध, साहित्य और भाषा की अर्द्धवार्षिकी), जुलाई से दिसंबर 2009, लखनऊ (उ.प्र.) (प्रधान संपादक), ISSN: 0975-5403,

चित्र 3.13.1 **नूतनवाग्धारा**

- ❖ नूतनवाग्धारा, त्रैमासिकी, बाँदा (उ.प्र.), ISSN: 0976-092X, जनवरी 2010 से निरंतर,
- ❖ विकल्प, पं.जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय (पं.जे.एल.एन. कॉलेज) की वार्षिक पत्रिका, बाँदा (उ.प्र.),
- ❖ कुछ स्मारिकाएँ आदि।

3.14 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

- प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति और स्वदेशी की भावना से ओत-प्रोत हैं तथा समाजसेवा में तल्लीन रहने वाले शिक्षाविद हैं।
- वे सरलता, सौम्यता और उदारता की प्रतिमूर्ति हैं।
- वे मनोवैज्ञानिक दृष्टि रखते हैं और दूरदर्शी होने के कारण अपने लक्ष्य का संधान सहजता से कर पाने में सक्षम हैं।
- उनके हृदय में मित्रों के प्रति उदात्त भाव हैं।
- उनके अंतर में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर है।
- वे अपने शिष्यों के प्रति वात्सल्य भाव से भरे रहकर उनके प्रति सदैव उदार रहते हैं तथा उन्हें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।
- वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति अत्यंत सजग, सत्यनिष्ठ व सच्चे हैं। वे आत्मश्लाघा से सदैव दूरी बनाए रखते हैं।
- अनुशासनप्रियता और समय की पाबंदी उनकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से हैं।
- वे एक कुशल और उत्कृष्ट वायुयोद्धा रहे हैं और अब देश एवं देश के बाहर एक प्रतिष्ठित व मूर्धन्य शिक्षाविद-भाषाविद-साहित्यकार के रूप में स्थापित हैं।
- वे कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित होकर अपने विद्यार्थियों को संतुष्ट करते हैं, इसीलिए उनके विद्यार्थी उनकी अनूठी शिक्षण-पद्धति की प्रशंसा करते हैं। वे अपने विद्यार्थियों को संघर्षशीलता, कर्मठता, ईमानदारी, दूरदर्शिता, लगनशीलता आदि के पाठ पढ़ाते हैं और पक्के इरादों को मजबूत रखने पर बल देते हैं।

3.15 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के साहित्य की विशेषताएँ

- प्रो. (डॉ.) शुक्ल के साहित्यिक भाषा में वाचक, लक्षक, व्यंजक शब्दों के साथ ही तीनों शब्दशक्तियों (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) का प्रयोग हुआ है, फलतः प्रसंगानुकूल उनकी भाषा से तीनों ही अर्थ (वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, और व्यंग्यार्थ) निस्सृत होते हैं। उनके लेखों-निबंधों-कविताओं-गीतों सहित अन्य विधाओं की भाषा में आवश्यकतानुसार सरलता एवं सादगी भी मिलती है। स्वयं के गढ़े हुए प्रतीकों-बिंबों आदि के माध्यम से उनमें नूतन प्रकाश अर्थात् नया अर्थ देने की अद्भुत शक्ति है। आपका साहित्य जन-जीवन को उन्नत बनाने वाला, मानवता का पोषक, विश्व बंधुत्व की भावना जागृत करने वाला है।

- उनके साहित्य में राष्ट्रीयता, ऐतिहासिकता, पौराणिकता, ऐंद्रियता, कल्पनाशीलता, यथार्थ, भावनात्मकता, संवेदनशीलता, तथ्यात्मकता, सूत्रात्मकता आदि के गुण तो हैं ही, स्नेह-प्रेम व प्राकृतिक सौंदर्य के अनूठे चित्र भी हैं।

- उनके साहित्य में मानवता का संदेश छुपा हुआ है, जो व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से व्यष्टि की यात्रा करवाता है। वे सभ्यता के आरंभ से लेकर आज तक की बातें करते हुए सड़ी-गली मान्यताओं को दरकिनार कर स्वस्थ भावबोध जगाते हैं और अच्छी-प्रासंगिक पुरानी से पुरानी परंपराओं को अपनाने की वकालत करते हैं।

- उनकी रचनाएँ रससिद्ध और आलंकारिक हैं। उनकी रचनाओं का कथ्य सरस, चित्ताकर्षक, सार्वकालिक, भावसिद्ध और किसी नदी की तरह गतिशील व प्रवहमान है। कहानियाँ उन्होंने बहुत कम लिखी हैं, किंतु जितनी भी हैं, उनका कथानक रुचिकर व सराहनीय है, जिनका तारतम्य खंडित नहीं होने पाता है। संस्मरण उन्होंने अधिक लिखे हैं, जिनको पढ़ने में कहानी जैसा आनंद प्राप्त होता है।

- उनके संपादकीय सारगर्भित, तथ्यों से परिपूर्ण, शोधपरक, जिज्ञासा को शांत करने वाले, समसामायिक प्रसंगों-समस्याओं का प्रकाशन-समाधान करने वाले, नई जानकारियाँ देने व ज्ञानवर्धन कराने वाले साहित्यिकता से परिपूर्ण होते हैं। उनके शोधपत्रों व शोधालेखों में मौलिकतापूर्ण नए तथ्यों का उद्घाटन

होता है, जिनमें दूर की कौड़ी होती है। उनके द्वारा संपादित ग्रंथ भी अत्यंत महत्त्व वाले हैं। उनके संपादन में डेढ़ दशक से भी अधिक समय से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नूतनवाग्धारा' की ख्याति विदेशों तक में फैली है।

3.16 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी एवं उनके साहित्य के संबंध में अन्य विद्वानों की सम्मतियाँ

3.16.1 डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री (सहायक प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, जालंधर, पंजाब)

डॉ. अग्निहोत्री जी का मत है कि वर्तमान युग में प्रो. अश्विनीकुमार शुक्ल साहित्य और काव्य के क्षेत्र में एक सशक्त स्तंभ हैं। समकालीन रचनाधर्मिता में उनका बहुत बड़ा योगदान है। भाषिक संरचना के अंतर्गत उन्होंने काव्य विधा में लालित्य लाने के लिए तद्भव, तत्सम एवं आंचलिक शब्दों का यथास्थान प्रयोग करके सुंदर-आकर्षक बिंब उकेरे हैं। उनके द्वारा हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, जो काव्य की रोचकता को बढ़ाने में पूर्ण सहायक सिद्ध हुए हैं। उन्होंने तुकांत (छंदबद्ध) और अतुकांत (छंदमुक्त) दोनों ही शैलियों का प्रयोग किया है। अपने गीतों में उन्होंने स्वयं द्वारा गढ़े गए छंदों का प्रयोग किया है। उनकी छंदमुक्त रचनाओं में अक्षरमैत्री की दृष्टि से लयात्मकता में कहीं भी दोष या अवरोध नहीं पाया जाता है।

'अलबेले इक्कीस' उनके द्वारा संपादित किया गया अनूठा ग्रंथ है, जो हिंदी साहित्य के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगा। आने वाली नई पीढ़ियों के लिए 21 महत्त्वपूर्ण कवियों की 21-21 कविताओं का यह संग्रह अनूठा उदाहरण बनेगा। अपने अंतर में कुल 441 कविताएँ समेटे यह संग्रह अंतरराष्ट्रीय स्तर का है। उनके द्वारा संपादित 'नूतनवाग्धारा' नामक त्रैमासिक पत्रिका संपादन की दृष्टि से तो अपना एक विशिष्ट स्थान रखती ही है, हिंदी भाषा-साहित्य-संस्कृति के विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। उनका समग्र कृतित्व हिंदी-जगत के लिए अनूठा एवं संग्रहणीय है।

3.16.2 कीर्तिशेष प्रोफे. (डॉ.) यतींद्रनाथ तिवारी, प्राचार्य, आर्मापुर पी.जी. कॉलेज, कानपुर

कीर्तिशेष तिवारी जी का मानना रहा है कि ज्ञान के लिए शास्त्र-ज्ञान परम आवश्यक है। छंद उस शास्त्र-ज्ञान की प्रथम पहचान है। हिंदी-जगत के समस्त छंदों में 'दोहा' सर्वाधिक प्राचीन है; जिसका

प्रथम प्रयोग अपभ्रंशकाल में 8वीं शताब्दी में सिद्ध साहित्य के आदि कवि सरहपा ने अपने 'दोहाकोश' में किया था। दोहा वह प्रथम लोक-प्रचलित छंद है, जिसमें लय को केंद्र में रखते हुए तुक मिलाने का नैसर्गिक प्रयास हुआ। निर्गुण संत संप्रदाय में इसे 'साखी', सूर-मीरा के यहाँ 'पद-शैली', जायसी-तुलसी के यहाँ 'प्रबन्धात्मक शैली', रीति ग्रंथों में लक्षण-निरूपण तथा सतसई में 'मुक्तक' के रूप में प्रयुक्त किया जाता रहा है। देशकाल और वातावरण के अनुरूप छंदशास्त्र के अंतर्गत इसे दोहा, दूहा, दोहरा आदि कई मिले-जुले नामों से समलंकृत किया गया, किंतु आज वह अपने अन्य नामों को दरकिनार करता हुआ केवल 'दोहा' के रूप में रूढ़ हो गया है। छंदशास्त्र की विपुल श्रृंखला में दोहा एक मात्रिक अर्द्धसम छंद है। इसके पहले और तीसरे चरण में 13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ होती हैं। विषम चरण के प्रारंभ में जगण नहीं होना चाहिए और सम चरण के अंत में लघु होना आवश्यक होता है। वे एक सुप्रसिद्ध आलेचक-समीक्षक-चिंतक रहे हैं और गद्य व गद्यविधाओं के सामर्थ्य को परख की तुला में तौलने में सिद्धहस्त रहे हैं। प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के साहित्यिक आकलन से संबंधित उनकी अग्रांकित टिप्पणियाँ महत्त्वपूर्ण हैं–

- आज के तुकांत और अतुकांतगामी साहित्य की बेशुमार भीड़ के मध्य विभिन्न शैलियों में काव्य संरचना करना एक जटिल कार्य है। प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी ने अपनी सारस्वत लेखनी से स्वयंभू बनकर अनेक विधों को गौरवान्वित करने का जो महनीय कार्य है, वह अनुपम और बेजोड़ है।
- वे अपने मन और मिजाज के सुलझे हुए कवि और लेखक हैं। वे एक सुलझे हुए लेखक तो हैं ही, एक प्रतिष्ठित आलोचक, एक उच्चस्तरीय संपादक, एक अच्छे कवि और संस्मरणकार भी हैं।
- वे लघुकथाएँ भी लिखते हैं, जो एक उपयोगी और चिंतनशील स्थापित विधा है। यह आकार में लघु होती है, किंतु उसमें आदि से अंत तक कथातत्त्व विद्यमान रहते हैं। यह अन्य विधाओं की तुलना में समकालीन पाठकों को अधिक जोड़ती है। यह हितोपदेश, नारे, गल्प, बतकही, किस्सागोई, समाचार, चुटकुले, बोधकथा, कौंधकथा (फ्लैश फिक्शन) आदि से इतर एक ऐसी

तीक्ष्ण विधा है, जिसमें कम-से-कम शब्दों में एक गहरी बात सुनियोजित ढंग से कह दी जाती है, जिसके अवलोकन-वाचन से ही पाठक-मन अतिरिक्त चिंतन के लिए उद्वेलित हो जाता है।

- किसी भवन का सुगठित ढाँचा तैयार होने के बाद उसके सुंदरीकरण हेतु साज-सज्जा की आवश्यकता तरह किसी कथा के विस्तृत कलेवर को काट-छाँटकर उसे लघुकथा में परिवर्तित करके कथातत्वों के माध्यम से सुषमामंडित करने में कथाकार शुक्ल जी परम दक्ष हैं।
- उनके साहित्य-चिंतन, वीक्षण-अन्वीक्षण ऐर आलोचना-कर्म की धार का अहसास उनके लेखन से होता है, जो अत्यंत प्रखर और प्रभावी है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य हो, धर्म हो, दर्शन हो, सभी में वे गहरे उतरते हैं।
- कविता की संवेदना पर विचार करते हुए वे अतीत से वर्तमान तक की कविता की आस्था से क्रांति तक की संवेदना-यात्रा को बहुत ही सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। वे संवेदनाओं का विभाजन प्रकोष्ठों में करके अपने मौलिक चिंतन को प्रमाणित करते हैं।
- उन्होंने भक्ति-साहित्य के मूल्यांकन में मध्ययुगीन भारत का गंभीर चिंतन किया है। उनके विचार से भक्ति, प्रेम और अध्यात्म के कारण ही मध्यकाल में भारतीय संस्कृति और दर्शन जीवित रह सका। निश्चित ही उन्होंने आदिकाल से लेकर अब तक के साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत करके अपने समीक्षक व्यक्तित्व का अनूठा परिचय दिया है।
- उनके द्वारा छायावादोत्तर हिंदी कविता का भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाना कविवर मिश्र के प्रति उनकी गहन रुचि और श्रद्धा को व्यक्त करता है।

प्रो. (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी के उदात्त व्यक्तित्व का संकेत इन दो सम्मतियों से मिल जाता है।

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

4.1 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी की प्रकाशित पुस्तकें

4.1.1 समीक्षा की धार

प्रो. (डॉ.) शुक्ल जी की इस पुस्तक में छोटे-बड़े कुल आठ निबंधात्मक शोध आलेख हैं, जो अपने आप में स्वतंत्र होते हुए भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। 'आधुनिक भारत और गाँधी' कथ्य का आधार निर्मित करता है, तो 'बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता : कल और आज' अहिंसा और शांति की भूमिका अतीत में तलाशते हुए उसकी वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है। कविता साहित्य की सबसे सशक्त और चिरंतन विधा है, इसलिए अगली कड़ी 'कविता की संवेदना कल और आज' के रूप में कविता की संवेदना का जायजा लिया गया है। भक्तिकाल हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वर्ण काल रहा है, इसलिए अगली कड़ी के रूप में 'भक्ति साहित्य के उद्गम की पृष्ठभूमि : एक विहंगम दृष्टि' को जोड़ा गया है। भक्तिकालीन कविता के बाद हिंदी कविता को सबसे अधिक आधुनिक 'नई कविता' ने उद्वेलित किया है, अतः उसका तुलनात्मक लेखा-जोखा 'आधुनिक हिंदी कविता की छायावादोत्तर काव्यधारा और नई कविता' में लिया गया है। आधुनिक हिंदी कविता की गाँधीवादी विचारधारा के सबसे बड़े कवि और विचारक के रूप में उनको 'भवानीप्रसाद मिश्र का रचना-वैभव और संवेदना' में चित्रित किया गया है। साहित्य में विचारधाराओं का वैभिन्य होना स्वाभाविक बात है। साम्यवादी विचारधारा को भी नकारा नहीं जा सकता है। अस्तु, प्रतीकात्मक स्तर पर एक कवि और एक कथाकार को चुना गया है, क्योंकि कविता के बाद कथा-साहित्य ही व्यक्ति एवं सामाजिक संवेगों को थामने में सक्षम है। 'अँग्रेजी के यथार्थवादी उपन्यासकार और यशपाल' के जरिए साम्यवादी कथा-साहित्य में भी मानवीय एवं वैयक्तिक पहलुओं के आधार पर शांति के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में बताया गया है कि साहित्य समाज ही नहीं संस्कृति का भी दर्पण होता है। यही कारण है कि उसमें व्यक्ति से लेकर सकल ब्रह्मांड की समीक्षा निहित होती है और उसका परम उद्देश्य मानव-जगत का कल्याण बन जाता है। दूसरे शब्दों में, साहित्य शांतिमय वातावरण का निर्माण करने में सक्षम होता है और इसका तात्पर्य यह है कि सच्चा साहित्य वही है, जो अहिंसा की उत्पत्ति सभी स्तरों पर करते हुए अहिंसा का पक्षधर बना रहे। अहिंसा

का क्षेत्र भी समीक्षा के क्षेत्र की तरह व्यापक है। हिंसा चाहे वैचारिक हो अथवा शारीरिक, इसका नाश अहिंसा द्वारा ही संभव है। इसीलिए जब गाँधी अहिंसा की बात करते हैं, तो वह यह भी बताते हैं कि अहिंसा को साधन के रूप में काम में लगाकर दुष्ट प्रवृत्तियों को पराजित करें। स्नेह के बल पर घृणा को समाप्त करें। यदि अहिंसा के द्वारा हम बुराई को रोकने में असमर्थ होते हैं, तो हमें उसे हिंसा से रोकना चाहिए। बुराई के आगे कायरता के साथ झुक जाना अहिंसा नहीं है।
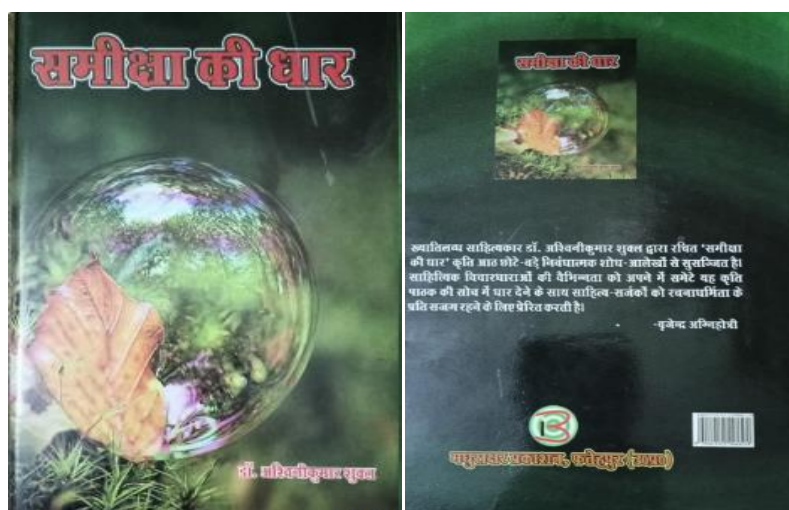
चित्र 4.1.1.1 **समीक्षा की धार**

4.1.2 पाठालोचन

लेखक-संपादक ने इस ग्रंथ में हिंदी साहित्य के लेखों-अभिलेखों-पाठों को प्रमाणित करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन अनेक विशेषज्ञों-विद्वानों-शोधार्थियों के आलेखों के माध्यम से किया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रो. शुक्ल जी ने
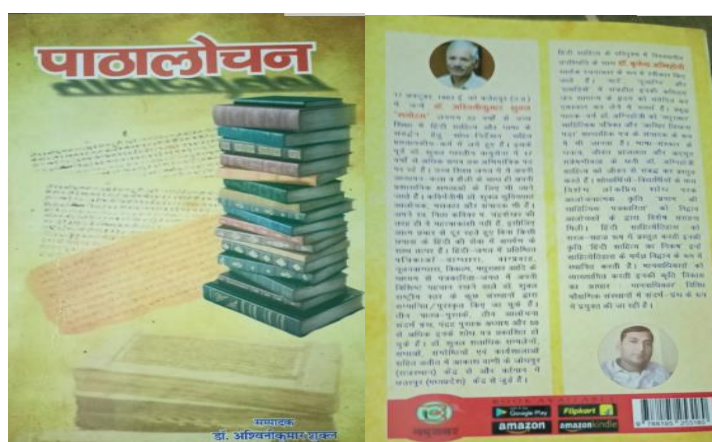
चित्र 4.1.2.1 **पाठालोचन**

पाठालोचन की प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले आधारों–काल, मूल, लिपि, भाषा और रचनाकार के बारे में विस्तृत

चर्चा की है। पाठालोचन की प्रक्रिया को परिभाषित करते हुए उन्होंने बताया है कि यह तथ्यान्वेषण संबंधित पाठ के लेखनकाल, उसकी मौलिकता, उसकी लिपि, उसकी भाषा और उसके रचनाकार के व्यापक विवेचन पर आधारित होता है। इस पुस्तक से पाठालोचन के प्रभावी तत्त्वों के आधार पर पाठालोचन की प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी तो मिलती ही है, पाठालोचन की ऐतिहासिकता और उसके विकास की रूपरेखा भी विस्तार से जानने को मिलती है। इस ग्रंथ में उन्होंने पाठालोचन के मूर्धन्य विशेषज्ञों की सैद्धांतिकता की महत्ता को स्थापित किया है और अनेक प्राचीन पांडुलिपियों व ग्रंथों की निर्धारित प्रामाणिकता का भी सम्यक् उल्लेख किया है। उपर्युक्त कारणों से 'पाठालोचन' ग्रंथ हिंदी साहित्य एवं भाषा के लिए उपयोगी होगी तथा मील का पत्थर साबित होगी। पुस्तक की भूमिका में उन्होंने आधुनिक हिंदी कविता के पुरोधा माने जाने वाले प्रसिद्ध कवि-साहित्यकार सच्चिदानंद हीरान्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की लोकप्रिय लंबी कविता 'असाध्य वीणा' की पंक्तियाँ उद्धृत की हैं, जिनसे भान होता है कि प्रो. शुक्ल जी में विनम्रता की अतिशयता है–

"श्रेय नहीं कुछ मेरा :

मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में

वीणा के माध्यम से अपने को मैंने

सब कुछ को सौंप दिया था–

सुना आपने जो वह मेरा नहीं,

न वीणा का था :

वह तो सब कुछ की तथता थी

महाशून्य

वह महामौन

अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय

जो शब्दहीन सबमें गाता है।"

4.1.3 अलबेले इक्कीस

कवि हृदय प्रो. (डॉ.) शुक्ल जी ने '**अलबेले इक्कीस**' काव्य संग्रह में इक्कीस समकालीन कवियों की इक्कीस-इक्कीस कविताओं का संपादन किया है। मनोरम, लालित्य प्रधान और पुरातन काव्य परंपरा का उदय कब और कैसे हुआ, इसका वर्णन उन्होंने इसकी भूमिका में किया है। उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक में बताया है कि कविता की विलक्षणता सरस भावपूर्ण संवेदो से है; कविता जितनी ही सरस होगी, उतनी ही लोकप्रिय
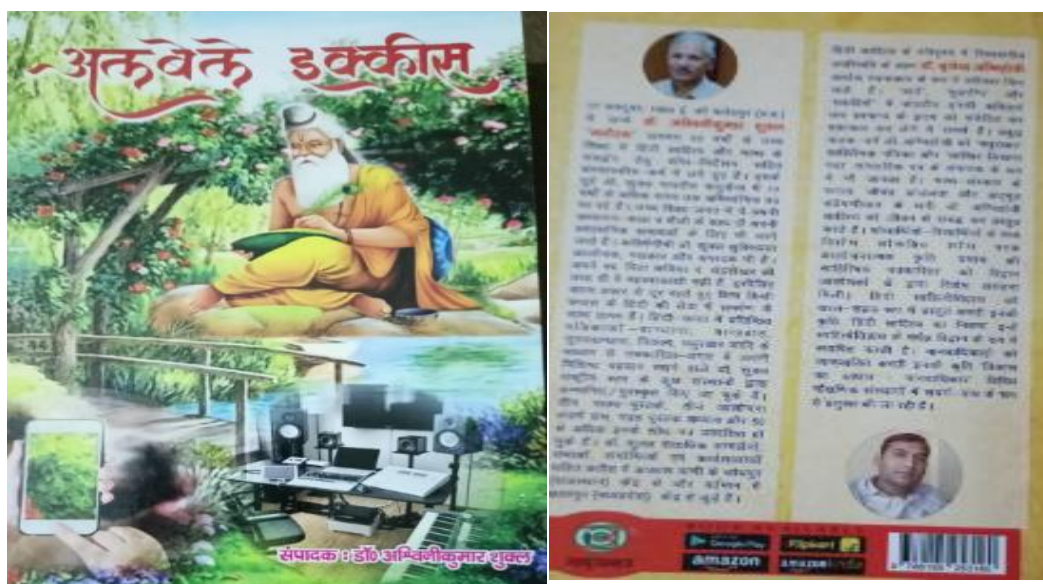
चित्र 4.1.3.1 **अलबेले इक्कीस**

होगी, क्योंकि वह भावों को जगाने में उतनी ही सक्षम होगी। कविता कीभावभंगिमाएँ पाठक की संवेदनाओं को स्निग्ध करती हुई मानवता से आप्लावित करती हैं, इसीलिए तो सभ्यताओं का उदय काव्य के साथ ही हुआ है और मनुष्य के अंदर शाश्वत गुणों का आविर्भाव काव्य के विकास के क्रम में हुआ है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कविता साहित्य और सभ्यता की जननी है, इसीलिए यह मनुष्यता की कसौटी भी है। तत्क्रम में कविता कभी विचार, तो कभी हथियार बनती रही है। कभी हौले से इसने अपना रूप-स्वरूप बदल लिया, तो कभी आंदोलनों के माध्यम से इसने सत्ता ही बदल डाली; कभी इसने प्यार-दुलार जताया, तो कभी रणभेरी नाद के साथ तकरार प्रदर्शित किया; कभी प्रेम की अतिशयता में अति शृंगारिक हो गई; तो कभी उदासियों का मौसम बन गई; कभी इसने बसंती राग सुनकर बहारों को लुभाया...। इस प्रकार उन्होंने काव्य की भावभूमि का वर्णन किया है।

इसी पुस्तक के माध्यम से उन्होंने भाषा, साहित्य तथा समाज के संबंधों को भी अत्यंत सहज-मनोरम ढंग से बताया है। वे कहते हैं कि किसी भी भाषा का साहित्य संबंधित समाज पर अवलंबित रहता है। तपस्वी सामाजिक जीवन से प्रभावी साहित्य का निस्सृत होना सुनिश्चित है। इसलिए हमें यह तथ्य सदैव स्मरण रखना चाहिए कि हमारा साहित्य यदि जीवन-साधना और तपश्चर्या की परिणति हो, उसमें भारतीय आत्मा का स्पंदन झंकृत होता हो, भारतीय संस्कृति का उदार स्वरूप परिलक्षित होता हो और उन शाश्वत आध्यात्मिक मूल्यों का आविष्कार होता हो, जिनके अभाव के कारण आज विश्व के अधिकांश देश विनाश की ओर अग्रसर हैं, तो इसका परिणाम यह होगा कि हमारा साहित्य केवल भारतवर्ष को ही नहीं, अपितु संपूर्ण संसार को प्रभावित करने में सक्षम होगा।

4.2 प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी की चुनिंदा प्रकाशित कविताएँ

4.2.1 शाम

सतरंगी शाम

चहकती-बहकती

मुस्कुराती-गाती

चित्र 4.2.1.1 **शाम**

दौड़ चली अपने प्रियतम दिवस के संग

कितनी व्यग्र थी वह

इस घड़ी के लिए

जिसे पाकर

छोड़ दिया अपना इंद्रधनुषी रंग

एक अकेला

झाँकता रहा क्षितिज के उस पार

शायद शाम लौट आए

किंतु अब तो

धीरे-धीरे
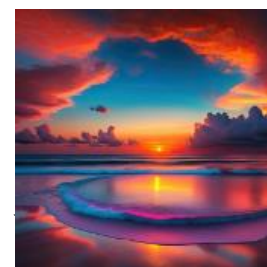
चित्र 4.2.1.2. **ढलता सूरज**

चित्र 4.2.1.3. **शाम का सूरज**

गहरे होते हुए अँधेरों के साए में

निशा अपना जाल फैलाने लगी है

चित्र 4.2.1.4 **शाम के तारे**

शाम तो प्रसन्न है

क्योंकि प्रियतम दिवस की बाहों में है

परंतु वह अकेला

नीले वितान की घनी छाँह के नीचे

जा बैठा है

और तारों से बतियाते हुए

प्रतीक्षारत हो गया है

अपने नीलमणि के अभ्युदय का

जिसमें वह बिंबित है।

चित्र 4.2.1.5 **शाम का चाँद**

4.2.2 होली

इस कविता में उन्होंने होली की उमंग के संग जीवन के रंग जोड़े हैं–

चित्र 4.2.2.1 **होली**

आग लगी है पलाश वन में

फाग मचा है राजमहल में

राग कराहे गाँव-गली में

काग पुकारे घर-मुँडेर में।

चित्र 4.2.2.2 **होली के रंग**

वसंत लाया फूलों की बहार

करें मंजरियाँ कुंजो का शृंगार

सज गए हार बागों के द्वार

कलियाँ करने लगीं अभिसार।

सुंदर सलोने रंगों के संग

उमंग-तरंग से भरे अंग-प्रत्यंग

चित्र 4.2.2.3 **होली में रंग का मजा**

होली के हर रंग में रँग

मन उड़ चला जैसे पतंग।

4.2.3 गुलाब

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी एक ओर तो अनुशासित और बेहद सख्त शिक्षक हैं, किंतु दूसरी ओर वे एक सहृदय साहित्यकार हैं। उनका व्यक्तित्व नारियल के फल जैसा है, जो ऊपर से तो अत्यंत कड़ा होता है, लेकिन अंदर से रससिक्त, कोमल और मृदुल होता है। उनकी 'गुलाब' कविता अनूठी है, जिसमें उनका स्वयं का व्यक्तित्व रूपायित हो उठा है–

चित्र 4.2.3.1 **गुलाब**

फूल गुलाब का

सुंदर-सुंदर, प्यारा-प्यारा

सबसे अलबेला, सबसे न्यारा

प्रतीक सुगंध का

प्यार के अनुबंध का

अनुराग का, आसक्ति का

आराध्य की भक्ति का

आस्था की कांति का

यौवन की भ्रांति का

मादक गुलाबी शांति का

अभिव्यंजित क्रांति का

सौंदर्य का, रूप का

कनक छाँव-धूप का

अभिसार का, व्यभिचार का

प्रेमी की मूक पुकार का

अभिमान का, श्रीवृद्धि का

चित्र 4.2.3.2 **गुलाब**

स्वामित्व का, समृद्धि का

देवत्व का, निजत्व का

चित्र 4.2.3.3 **गुलाब**

सत्व का, कृतित्व का

गीत का, संगीत का

मन की मन पर जीत का

प्रकृति की निःशब्द तान का

ज्ञान का विज्ञान का

यूँ कविता चल रही थी

शब्दों में निर्द्वंद बह रही थी

प्रातिभ बुद्धि क्रिया शील थी

कल्पना भी अनुकूल थी

सहसा जगी तर्क बुद्धि

कविता की गति हुई आबिद्ध

प्रश्न हवा में उछल पड़ा

उत्तर हेतु मचल पड़ा

गुलाब पहले आया या आदमी?

साँस कवि की रह गई थमी की थमी

हद तो तब हो गई

जब गुल व आब में ठन गई

चित्र 4.2.3.4 **गुलाब**

गुल ने कहा–शोर हूँ, शबाब हूँ मैं

आब चीखा–पानी, अर्क, शराब हूँ मैं

गुल फिर चिल्लाया

अपने रूपों को गिनाया–

फूल हूँ, गाल का निशान हूँ

आँख का डेला हूँ, गोलान हूँ

बोला आब–क्यों हो बेताब?

बिना मेरे तुममें कहाँ ताब?

मिल गया कवि को जवाब

बोल पड़ा वह चुपचाप

निश्चित है पहले आया आदमी

फिर पूरी हुई गुलाब की कमी

आदमी न होता तो ताब न होता

न गुल, न आब, न गुलाब होता।

4.2.4 अवसाद से वसंत तक

कविवर शुक्ल जी की यह कविता निराशा के गर्त से बाहर निकलने का उपाय बताती है–

शून्यत्व नहीं है उचित

निराशा है यह

माना की वेदना है

अवसाद भी है

फिर भी नहीं है, सब कुछ यह

बीड़ा जब उठाया है तो पीड़ा भी होगी

चित्र 4.2.4.1. **अवसाद से वसंत तक**

क्रीड़ा कि परिणति कभी ब्रीड़ा भी होगी।

अकेले हो तो कोई बात नहीं

कारवाँ भी मिलेगा कभी

जीवन बस अवसाद ही नहीं

वसंत का मौसम भी मिलेगा अभी।

चित्र 4.2.4.2 **वसंत का मौसम**

यूँ ढाँपकर चेहरे को न बैठो

निहारो पार्श्व के सोपानों की तरफ

चित्र 4.2.4.3 **वसंत का आकाश**

छोड़कर मोह दीप के उजालों का

नयनों में भरो आकाश में टके हरफ

कुछ और नहीं तो पौधे को ही तको

कैद में तो है पर मुरझाया नहीं

निकलकर इस चारदीवारी से भी लखो

बनेगा सुंदर जीवन का सफर तभी।

4.2.5 सूखा पड़ गया

सूखा न होने के बावजूद जब सरकारी अमला सूखा घोषित कर देता है, तब किसान की क्या दशा होती है–

एक सुबह जब जागा गिरधर,चीख रहा था गाँव भर

सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया।

चित्र 4.2.5.1 **हल चलाता किसान**

गिरधर भागा खेतों को, पाया दुरुस्त सब मेड़ों को,

कल ही तो सहा था पेड़ों ने, जोरों से, भारी थपेड़ों को,

सहलाया तब उसने सारे हरियाए हुए पेड़ों को,

हो जुलाई चाहे उसने रोपा आषाढ़ में रेड़ों को,

समझ न पाया फिर कैसे लोगों को दौरा पड़ गया,

सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया।

चिंतामग्न जब लौटा घर, नजर पड़ी अखबार पर,

चौंक उठा पढ़कर वह पहले पन्ने की यह खबर,

"पोखर-ताल सभी हैं सूखे, सूख रही है हर नहर,

खरीफ तो अब गई ही, पड़ेगी रवि पर भी कहर,

चित्र 4.2.5.2 **बैलगाड़ी चलाता किसान**

रेडियो और टीवी को सूखे का बुखार चढ़ गया,

सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया।

चित्र 4.2.5.3 **खाद डालना**

हर दफ्तर की नींद खुली, तबकों में खलबली मची,

कई तरह से, सूखे से लड़ने की रणनीति रची,

नेता जागे, मंत्री भागे, बन गई हालत अचकची,

अधिकारी हो गए पस्त, झूठे ही सबकी रीढ़ लची,

सुधि किसान की आखिर न ली, सूखे से लड़ गया,

सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया।

चित्र 4.2.5.4. **अनाज को निकालना**

4.2.6 माँ की याद

माँ! मुझको एक लोरी सुना दे!

सुनी हुई या कोरी सुना दे!

नींद नहीं आती अब मुझको,

इसीलिए तू ओ! री! सुना दे!

तूने अपना स्नेह पिलाया,

खुद भूखी रह मुझे खिलाया,

भूख नहीं लगती अब मुझको,

चित्र 4.2.6.1 **माँ का प्यार**

चित्र 4.2.6.2 **माँ और बेटा**

इसीलिए तू ओ! री! खिला दे!

तेरे आँचल की निर्मल छाया,

असंख्य वटों की वह माया,

मिल नहीं पाती है अब मुझको,

इसीलिए तू ओ! री! दिला दे!

फूल बन गए कंटक क्यों,

चित्र 4.2.6.3 **बारिश की बूंदें**

वसंत बन गया पतझड़ क्यों,

बारिश भी चुभती अब मुझको,

इसलिए तू ओ! री! बता दे!

सपने भरे मेरी आँखों में,

एक नहीं, वे थे लाखों में

दिखते हैं वे अब नहीं मुझको,

इसलिए तू ओ! री! दिखा दे!

4.2.7. दादा जी

प्रस्तुत कविता परिवार के महत्त्व के साथ ही यह भी बताती है कि यदि व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य समय पर पूरा करने का अवसर नहीं मिलता है, तो पाश्चात्ताप के सिवा कुछ भी हाथ नहीं आता है–

चित्र 4.2.7.1 **चाँद**

उस दिन

स्वच्छ नीले वितान तले

दादा जी ने

मानवता का पाठ

सिखाते हुए बतलाया था

कि बेटा

नव वर्ष तो आता है

किंतु

कब आता है?

कैसे आता है?

यह आज तक न जान सका मैं।

नन्हा-सा था, तो

चित्र 4.2.7.2 **प्यारे दादा जी**

एक पहर की रोटी भी

थी मुश्किल से मिल पाती

कितने ही नव वर्ष

आकर चले जाते थे

किंतु

मेरी जर्जर कमीज

मेरे बदन से रहती थी

चित्र 4.2.7.3 **हरे-भरे खेत**

लिपटी उसी तरह

दस मील की दूरी

तय करता था–

पाठशाला आने-जाने में,

बूढ़े बाप को दिन भर

खेतों में

तपते-झुलसते देखता था

चित्र 4.2.7.4 **उपदेश देते गुरु**

चित्र 4.2.7.5 **पाठशाला**

तब सोचता था कि

बड़ा होकर कुछ कमाकर

उनके लिए एक जोड़ी जूते

व सिर ढकने को दूँगा साफा

सर्वप्रथम ही।

आगे बोले दादा द्रवित कंठ से–

बड़ा तो हुआ मैं

कमाने भी लगा मैं

पर हाय रे! मेरा दुर्भाग्य!!

अब तो वह रहा ही नहीं

जिसने स्वयं की क्षुधा

को भूलकर

मेरी भूख मिटाई थी

स्वयं निर्वस्त्र रहकर

मुझे शिक्षा दिलवाई थी।

4.2.8 दीपावली

प्रकाश के विभिन्न रंगों को समेटने वाली दीपावली पर एक सुंदर कविता देखिए–

चित्र 4.2.8.1 **दीपावली**

हम हम प्रकाश में दीप्यमान हो

दीपों की पात सजाते

हर्षित होते मन अपने

तन उमंग में भीगे जाते।

सराबोर हो खुशियों में

खुशियाँ हमने भी बाँटी होती

सर्वस्व बाँट देने पर भी

रिक्त न होती अपनी थाती।

चित्र 4.2.8.2 **दीपों का उजाला**

इस घर में भी फैला होता

बिल्कुल वैसा ही उजियाला

जैसे अंबर में बिछती है

नित तारों की उजली माला।

चित्र 4.2.8.3 **तारों का अंबर**

पर यह सब तब ही होता

तम न ऐसे बिखरा होता

जबकि मैं एकल न होकर

'मैं' से इस क्षण 'हम 'होता।

चित्र 4.2.8.4 **अंबर**

4.2.9 घर-उपवन

घर के उपवन होने की महत्ता इस कविता में दर्शाई गई है–

चंदन तरु की शीतलता थी

न्यौछावर थी पल्लवित मधुरता,

द्रव्यों से कुसमित थे अक्षय वृक्ष

चंद्रहास करती थी आत्मीयता।

चित्र 4.2.9.1. **उपवन**

शेष न था कुछ उस उपवन में

खग-पुष्पों का था जहाँ बसेरा,

रहा उपवन वह सदा सुषमित

शेखर का क्योंकि उसमें था घेरा।

सावन की छाती थी हरियाली

विजय-पताका-सी लहराती,

त्री थी आदर्श स्त्री का रूप

सावित्री बन ममता बरसाती।

चित्र 4.2.9.2 **फूलों का आँगन**

अश्विनी रूप धर अश्विन आया

अरविंद दूसरा पुष्प विहँसा

चित्र 4.2.9.4 **फूल**

बगिया पूर्ण तब हुई विकसित

जब दो कलियाँ बनी मंजु-मंजूषा।

महल तुच्छ था तुलना में

मुदित था वह ऐसे कुंज,

रंजित रहते थे साँझ-प्रात

मनोरम दृश्यी ऐसा था पुंज।

चित्र 4.2.9.3 **खिलते फ़ूल**

चित्र 4.2.9.5 **महल**

4.2.10 मानव

कविवर शुक्ल जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से मानव की अनन्य छवि चित्रित की है–

चित्र 4.2.10.1 **मुखड़ा**

मानव सदा से उद्यत रहा है, है, रहेगा

उत्कर्ष के पथ पर

नित नूतन

तथ्यों, विचारों, धारणाओं व कामनाओं को

नए आयाम के मुखौटे पहनाते हुए।

चित्र 4.2.10.2 **मुखौटे**

चित्र 4.2.10.3 **सुसज्जित आँगन**

प्रारंभ

मानवीय

धरातल पर ही

करता आया है वह

अभिलाषा के रथ पर

सदा-सदा

यश, अर्थ व कंचन की चाहत से

खुद को इधर-उधर भरमाते हुए।

दयामय

नेहयुक्त वह,

विश्व बंधुत्व के मापदंड

सहिष्णुता व

सत्यभाव की शपथ पर

चित्र 4.2.10.4 **सत्यभाव**

चित्र 4.2.10.5 **झरोखे**

पुनः पुनः

अर्णव-सम दुष्कर जीवन-प्रवाह

के थपेड़ों को थपकाते हुए।

धूप-छाँव

झंझों-झोंकों

आतप-वृष्टि

सूखे गीले जीवनपथ पर

उत्कर्ष-शिखर

के मध्य न जाने कितने घावों के

कष्ट, दर्द, अनुभव सहलाते हुए।

इतिहास

विसंगतियों का

उसका जीवन

चित्र 4.2.10.6 **अद्भुत दुनियाँ**

कुछ अधिक नहीं

भावों से लथपथ पर

क्षुद्र बूँद-सा

टिप-टिप, टप-टप, बुद-बुद

अनगिनत रंग झलकाते हुए।

अकिंचन

अधिविशाल

गगन-स्पर्शी

चित्र 4.2.10.7 **पानी की बूँदें**

अस्तित्वबोध की

परिभाषा को मथकर

कई-कई

सुषुप्त अभिलाषाओं को

सच करके हर्षाते हुए।

चित्र 4.2.10.8 **गगन-स्पर्शी**

4.2.11 गति

कविवर शुक्ल जी गति को भी गति देने में दक्ष हैं–

गति परिचायक है

जीवन की

क्योंकि

जब तक गति है,

जब तक स्पंदन है,

चित्र 4.2.11.1 **जीवन गति**

जब तक धड़कन है,

तब तक है साँस,

तब तक है गीत,

तब तक है सुरभि

यानी

चित्र 4.2.11.2 **सांत्वना**

गति पर्याय है–

जीवन की

जीवन के लय की

जीवन के संगीत की

और प्रलय की भी,

कर देती है ढेर स्थिरता

गति को,

चित्र 4.2.11.3 **नक्षत्र**

जीवन को,

यौवन को,

ग्रह को,

नक्षत्र को

और मति को भी।

4.2.12 सुबह

कविवर शुक्ल जी के यहाँ सुबह का चमत्कृत कर देने वाला रूप भी है–

चित्र 4.2.12.1 **सुबह की किरण**

नित्य डूबती साँझ की आँखों में

आँखें डाल देता हूँ मैं

उसका मुख

लज्जा से

रक्त-विवर्ण हो उठता है

मेरी तीखी दृष्टि

चित्र 4.2.12.2 **भ्रष्टाचार**

संध्या के अंतर को

भेदती ही चली जाती है

उसके रजनी में

परिवर्तित होने में

मुझे मानवता डूबती-सी लगती है

तब मुझे चीख सुनाई पड़ती है

मानवता की

डूबती साँसों की

चित्र 4.2.12.3 **मानवता**

लगने लगता है कि

साँझ रक्तिम हुई है

न्याय, सत्य और सहानुभूति के खून से

तिमिर के सदृश ही

हो रहा विस्तार है

तेजी से

व्यभिचार, भ्रष्टाचार व अनाचार की सत्ता का,

फिर भी

सूरज की

उगती किरणों से

सुबह तो होती है

और होगी भी।

चित्र 4.2.12.4 **सूरज की उगती किरण**

पंचम अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता ने अपने लघुशोध-प्रबंध **'प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान'** द्वारा निष्कर्ष रूप में प्रोफेसर (डॉ.) शुक्ल जी के बारे में अधोलिखित तथ्य खोजे हैं–

- अगर सफलता की सर्वश्रेष्ठ ऊँचाइयों पर पहुँचना है, तो व्यक्ति को अपना लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण मेहनत, लगन से कार्य करते करना चाहिए, विपत्तियों एवं कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए, लगनशील व्यक्तियों को एक न एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।
- प्रोफेसर (डॉ.) शुक्ल जी ने अध्यापन और उसके पहले के समय में अनेक प्रसिद्ध मंदिरों एवं पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया, जिनके बारे में उनके अनेक अविस्मरणीय संस्मरण हैं।
- उनको कविताओं की रचना करने एवं उनमें सही बात पर मोहर लगाने की प्रेरणा का श्रेय उनके पिता व गुरु को जाता है।
- उनको अध्ययन-यात्रा के समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी लगन और मेहनत के साथ उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की।
- अपने अध्ययन के प्रति निरंतर सजग रहकर अपनी सेवायोजन-यात्रा (भारतीय वायुसेना का कार्यकाल और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जारी कालावधि) के दौरान उच्च पदों पर आसीन हुए और आज भी हैं।
- उन्होंने अपनी सेवायोजन-यात्रा भारतीय वायुसेना में प्रारंभ की थी और तत्पश्चात् असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर के रूप में आगे बढ़ते हुए संप्रति भारत भर में प्रतिष्ठित पं. जे.एल.एन. कॉलेज, बाँदा (उत्तर प्रदेश) के यशस्वी हिंदी विभाग व शोधकेंद्र के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।
- महापुरुषों का जीवन जनसामान्य के लिए अनुकरणीय बन जाता है। महापुरुषों का जीवन व उनका व्यक्तित्व तथा उनके सभी कृत्य असामान्य होते हैं। जो जन्मजात कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों

का सामना करके ऊँचे उठते हैं, और श्रद्धास्पद बन जाते हैं, ऐसे ही महापुरुष समुचित मार्गदर्शन कर सकते हैं। उन्हीं महापुरुषों में से एक हैं– प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी, जिन्होंने अपना संपूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ, शिक्षित और सांस्कृतिक समाज के सर्जन हेतु समर्पित कर दिया है।

- प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी ने अपने जीवन में यह अनुभूत किया कि पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को भुलाते जा रहे हैं, जो कालांतर में हमें गरिमारहित कर देगी। वे ऐसे भारत की संकल्पना करते हैं, जिसमें शिक्षा एवं संस्कृति के द्वारा ऐसे समाज का निर्माण किया जाए, जो भारत की अन्य संस्कृतियों एवं आध्यात्मिक शक्तियों को ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम खोजों से संतुष्ट कर देश को पुनः विश्वगुरु का दर्जा दिला सके। प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी इसी संकल्प को पूरा करने में प्रयासरत हैं।
- प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल जी का मानना है कि गुरुकुल में शिक्षकों, आचार्यों का कर्त्तव्य है कि शिक्षार्थियों को ऐसी प्रेरणा, ऐसे सुसंस्कार, ऐसा सत्शिक्षण एवं सीख दें, ताकि वे समाज एवं स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं विश्व के लिए सुंदर गुलशन का निर्माण कर सकें।
- उनका मानना है कि शिक्षकों को चाहिए कि वे बिना भेदभाव के अपने शिष्यों को उन्नति-प्रगति के पथ पर अग्रसर करके उनके अंदर छिपे दोषों-दुर्गणों का विरेचन कर गुणों का समावेश करें।
- उनका कहना है कि विद्यार्थी को अपने कर्म के बल पर जीवन का निर्माण करना चाहिए और प्रत्येक विद्यार्थी को विनम्र, अनुशासित, नियमबद्ध, संयमित तथा सक्रिय रहना चाहिए।
- उन्होंने शिक्षा में व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण इकाई माना है, क्योंकि अगर व्यक्ति शिक्षित चरित्र और गुण वाला होगा तो समाज भी शिक्षित होगा।
- उन्होंने समन्वय शिक्षा अर्थात् प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिकता के साथ विद्यार्थियों को शिक्षित करने के प्रयास की सराहना की है।
- उन्होंने व्यक्ति का परीक्षण शरीर, मन, आत्मा और हाथों के स्तर पर करके व्यावसायिक शिक्षा देने की बात कही है।

- उनका मानना है कि समाज के अनाथ, बेसहारा बच्चों को जिनका कोई नहीं है, उनको निःशुल्क शिक्षा देकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है।
- वे मानते हैं कि सभी स्तर के संस्थानों में सर्वांगीण विकासपरक शिक्षा का संचालन किया जा रहा है तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा दी जा रही है और जो संस्थान ऐसा नहीं कर रहे हैं, उन्हें भी ऐसा ही करना चाहिए।
- उनकी सोच के अनुसार विद्यार्थियों का चरित्रवान होना अति आवश्यक है तथा इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि पुस्तकीय शिक्षा उपयोगी है, लेकिन विद्यार्थियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि उनमें चरित्र का निर्माण हो, उनकी मानसिक शक्ति में वृद्धि हो, बुद्धि का विस्तार हो और वे अपने पैरों पर खड़े हों।
- वे कहते हैं कि बहुसंख्यक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करके उच्च पदों पर सरकारी सेवा कर रहे हैं तथा अन्य अनेक गुरुकुलों से शिक्षा ग्रहण करके उपदेशक बनकर भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ

शोधकर्ता ने अपने लघु शोधप्रबंध **'प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान'** हेतु सम्यक् अध्ययन करने के उपरांत निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ निकाले हैं–

- एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के गुणों को परख कर उनके निखार हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए, क्योंकि शिक्षक का जीवन तभी सफल होता है, जब शिक्षार्थी उन से भी आगे निकल जाए।
- प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में जब भी अवसर मिले भ्रमण एवं यात्रा पर जाना चाहिए। इससे हमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति को निकट से जानने का अवसर मिलता है। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है, अनेकता में एकता एवं वसुधैव कुटुंबकम् के भाव हमको सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान मिलते हैं। सभी स्तरों के विद्यालयों के व्यवस्थापकों को प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों को दूर-दराज (भिन्न सांस्कृतिक परिदृश्य से परिचित कराने हेतु) भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए।

- हमें अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार का बनाना चाहिए कि हमारे गुणों का प्रकाश चारों ओर फैले और हमें स्थानीय तथा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आधिकारिक कार्यक्रमों में सहभागिता करने का अवसर मिले, जिससे समाज लाभान्वित हो एवं भावी पीढ़ी को प्रेरणा प्राप्त हो।
- प्रोफेसर (डॉ.) शुक्ल जी ने अनेक कविताओं की रचना की, जिनमें से कुछ ही प्रकाशित हैं व अधिकांश अभी अप्रकाशित हैं तथा उनका लेखन अनवरत जारी है। व्यक्ति को जीवन में कुछ न कुछ करते रहना चाहिए, लगनशील व्यक्ति मुकाम पर पहुँचता ही है, हमें भी उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर किसी क्षेत्र विशेष में निरंतर अपना योगदान करते रहना चाहिए और ऐसा करते हुए अपने ज्ञान को प्रकट करते रहना चाहिए।
- संस्थानों आदि में शिक्षकों को विषय के ज्ञान के साथ-साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान होना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धति के ज्ञान को पुस्तकों, पत्रिकाओं, वेद- पुराणों, इंटरनेट आदि से अद्यतन करते रहना चाहिए।
- शिक्षकों को समय-समय पर अंशकालीन व दीर्घकालीन प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रोजेक्ट वर्क में भाग लेना चाहिए।
- आज हम विश्वग्राम में जी रहे हैं, इसीलिए शिक्षकों का दायित्व है कि वे अपने शिक्षार्थियों को इसकी महत्ता से अवगत करवाएँ और सूचना-संचार-प्रौद्योगिकी को आधार बनाकर भावी पीढ़ी को प्रेरित करें कि वे सूचना-संचार-प्रौद्योगिकी (ICT) के साथ-साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) जैसी तकनीकों का प्रयोग मानव-कल्याण के लिए ही करें।

5.3 अध्ययन के सुझाव

प्रस्तुत लघुशोध **'प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान'** हेतु विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात् पाया गया कि किसी भी शोधकार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए कि उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हो। प्रस्तुत शोध-अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

- पिछले बिंदु 'शैक्षिक निहितार्थ' में वर्णित तथ्यों के आलेक में शिक्षकों को समुचित अध्ययन करना चाहिए।
- सप्ताह में कम से कम दो बार भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म से जुड़े विषयों पर विचार विमर्श करना चाहिए।
- सभी स्तरों के विद्यालयों के शिक्षा-शिक्षण के परिवेश को पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से मुक्त करने की आवश्यकता को देखते हुए भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के महत्त्व को समझना-समझाना चाहिए तथा आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ इसके प्रति जागरुकता बढ़ानी चाहिए।

अंत में हम कह सकते हैं कि समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए एवं शिक्षा को संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए। वस्तुतः धार्मिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा ही ज्ञान का आदि स्रोत है और ज्ञान ही शक्ति और समृद्धि का मूल आधार है। जिस देश में सांस्कृतिक शिक्षा का अभाव है, उस देश का शासन पंगु होता है और उसका अस्तित्व हमेशा खतरे में रहता है।

5.4 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शैक्षिक शोध में उपादेयता अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत लघुशोध का शीर्षक **'प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान'** है, जिसके अंतर्गत शिक्षाविद-प्रशासक-लेखक-कवि-संपादक शुक्ल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया, जिससे शिक्षक, विद्यार्थी एवं जनसामान्य को इनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी रुचि के अनुसार जीवन में ऐसे पर्याप्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए, जिससे यह संसार लाभान्वित होकर ऐसी विभूतियों को सदैव याद भी रखें।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध में कविवर **प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल 'मनोरम'** की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं का अध्ययन किया गया है। 'मनोरम' उनका साहित्यिक उपनाम है। उनकी कविताओं और अन्य विधाओं की रचनाओं को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है, जो हम सभी के साथ अनुस्यूत हैं। इनकी पुस्तकों का अध्ययन कर शिक्षक, विद्यार्थी एवं जन सामान्य भारतीय संस्कृति के महत्त्व को समझ सकेंगे तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगे।

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किए गए लघुशोध-प्रबंध **'प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान'** में शिक्षाविद-प्रशासक-लेखक-कवि-संपादक शुक्ल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के साथ ही उनकी चुनी हुई प्रकाशित रचनाओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोधों हेतु सुझाव के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत कर रहा है, जो निम्नलिखित हैं–

- भावी शोधों में उनकी कविताओं में निहित मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोधों में बुंदेलखंड के अन्य साहित्यकारों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोधों में प्रोफेसर (डॉ.) शुक्ल जी के साथ अन्य विभूतियों के काम का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसिद्ध शिक्षाविद-प्रशासक-लेखक-कवि-संपादक शुक्ल जी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान पर आधारित है। भावी शोधों में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के महान व्यक्तित्वों को सम्मिलित किया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची

- तिवारी, बाबूलाल (1996-97)। *वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।*

  <http://hdl.handle.net/10603/10744>
- सिंह, नीलम(1999)। *भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।* *<http://hdl.handle.net/10603/12268>*
- *मिश्रा, शशि (2002)। समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।* <http://hdl.handle.net/10603/11762>
- वर्मा, रामनिवास **(2005)** । *भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय आगरा (उ०प्र०)*

  <http://hdl.handle.net/10603/361860>
- शर्मा, शशिकांत (2007)। *गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।*

  <http://hdl.handle.net/10603/12530>
- *सिंह, किरन (2008) रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता आलोचनात्मक*
- *अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)।*

  <http://hdl.handle.net/10603/178440>

- सिंह, अनंत बहादुर (2008)। *मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध।* डॉ० *राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)*।

  <http://hdl.handle.net/10603/239635>

- *सिंह, रेनू (2008)*। *भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*।
  <http://hdl.handle.net/10603/12262>
- तिवारी, सुधा (2009)। *लोकतान्त्रिक भारत कि शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*।

  <http://hdl.handle.net/10603/14905>
- शादाब, आबी (2009)। *जाकिर हुसैन एवं ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)*।

  <http://hdl.handle.net/10603/235529>
- https://images.app.goo.gl/mWVqZptc2peCJ1vu7 **(गुलाब का फूल)**
- ***https://images.app.goo.gl/aLLhC7gN3MikKShVA*** **(भ्रष्टाचार)**
- https://images.app.goo.gl/74KooMZYVFt9ySDh9 **(स्त्री शिक्षा)**

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल की पुस्तकें–

1. ***सामान्य हिंदी/ निबंधालोक*** (दो पाठ्य पुस्तकें), एकता प्रकाशन, झाँसी (उ.प्र.), 2003,
2. ***भवानीप्रसाद मिश्र की कविता: रचना-दृष्टि, संवेदना और शिल्प*** (आलोचना-पुस्तक), अभय प्रकाशन, कानपुर (उ.प्र.), 2014, ISBN : 978.93.80719.29.0,
3. ***समीक्षा की धार*** (आलोचना-पुस्तक), मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.), 2014, द्वितीय संस्करण, ISBN : 978.81.929060.3.4,
4. ***काव्य-मंजूषा***, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, ISBN :978-81-267-3070-4,

5. ***पाठालोचन***, मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.), 2019, ISBN : 978-81-929060-7-2,
6. ***अजस्र स्रोत तुम***, मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.), 2021, ISBN : 978-81-952531-0-4,
7. ***अलबेले इक्कीस***, मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.), 2021, ISBN : 978-81-952531-8-0
8. ***उत्तर प्रदेश का स्वतंत्रता संग्राम : फतेहपुर***, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ एवं भारतीय ज्ञानपीठ (एकमात्र वितरक – वाणी प्रकाशन ग्रुप), नयी दिल्ली, 2022, ISBN : 978-93-5229-878-5 ।

परिशिष्ट-I

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के जीवन की चुनिंदा झाँकियाँ

आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद के एक कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए

अरुणाचल प्रदेश के पासीघाट नगर में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय-विशेषज्ञ मित्रों के साथ

अपनी धर्मपत्नी, सुपुत्र और सुपुत्री के साथ

अपने महाविद्यालय में भारतीय हिंदी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन व राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक के रूप में

अपने महाविद्यालय में भारतीय हिंदी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन व राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक के रूप में

निजी पुस्तकालय में

हैदराबाद के गोलकुंडा किले में

अपने महाविद्यालय में

आकाशवाणी छतरपुर (मध्य प्रदेश) में
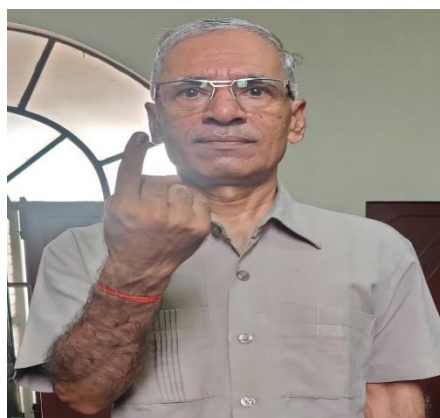
मतदान का संवैधानिक दायित्व निभाते हुए

एम.ए. हिंदी की छात्रा को स्वर्ण पदक पहनाते हुए

परास्नातक (हिंदी) के विद्यार्थियों को क्षेत्रीय भ्रमण करवाते हुए

विभागीय सहायक आचार्यों व परास्नातक (हिंदी) के विद्यार्थियों के साथ क्षेत्रीय भ्रमण पर जाते हुए

अपने कार्यालय में डॉ. भानुप्रताप सिंह 'भानु' से उनकी कृति स्वीकारते हुए

पैतृक गाँव का एक दृश्य

पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग के तत्त्वावधान में संयोजित नेपाल स्थित जनकपुर के लेखक मिलन शिविर में सम्मानित होते हुए

(बाएँ) मगहर में कबीर की समाधि पर, (दाहिने) सुप्रसिद्ध कथाकार महेंद्र भीष्म के लखनऊ स्थित आवास पर (बाएँ से दाएँ) महेंद्र भीष्म, प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल और अवधी के प्रसिद्ध कवि अरुणकुमार तिवारी

अमलनेर (महाराष्ट्र) में सुप्रसिद्ध विकलांग विमर्शी प्रोफेसर (डॉ.) सुरेश माहेश्वरी के साथ

फतेहपुर स्थित आवास

(बाएँ) हिंदी के मूर्धन्य विद्वान प्रोफेसर (डॉ.) टी.आर. भट्ट (अवकाशप्राप्त) के साथ हैदराबाद के आवास में, (दाहिने) पैतृक गाँव लोटहा (नगरपालिका फतेहपुर) स्थित पैतृक घर की एक झलक

प्रसिद्ध शिक्षाविद-कवि डॉ. गयाप्रसाद 'सनेही' की कृति 'बोता रहूँगा कविता के बीज' का लोकार्पण करते हुए

'पं. महेशप्रसाद अवस्थी शिक्षाविद' सम्मान-2022 स्वीकार करते हुए

पं. जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा के शिक्षक संघ द्वारा आयोजित पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की शोकसभा में प्रतिभाग करते हुए

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी न्यास के रजतजयंती के अवसर पर फीरोज गाँधी महाविद्यालय, रायबरेली के सभागार में एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में उड़िया के महाकवि पद्मश्री हलधर नाग द्वारा सम्मान ग्रहण करते हुए

'अलबेले इक्कीस' के लोकार्पण के अवसर पर सुप्रसिद्ध आलोचक-शिक्षाविद प्रोफेसर (डॉ.) सूर्यप्रसाद दीक्षित, अवकाशप्राप्त (बाएँ से दूसरे), सुप्रसिध्द भाषाविज्ञानी-शिक्षाविद प्रोफेसर (डॉ.) हरिशंकर मिश्र, अवकाशप्राप्त (बाएँ से तीसरे), सुप्रसिद्ध कथाकार महेंद्र भीष्म (बाएँ से पहले) के साथ

मध्यप्रदेश अशोकनगर स्थित राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी में आतिथ्य स्वीकार करते हुए

जलगाँव (महाराष्ट्र) स्थित कवयित्री बहणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय में भारतीय हिंदी परिषद के चालीसवें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर

प्रोफेसर डॉ. अश्विनीकुमार: सुप्रसिद्ध गीतकार-लेखक व महान शिक्षाविद प्रोफेसर (डॉ.) सत्येंद्र शर्मा के साथ

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर स्थित पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के बुलावे पर विश्वविद्यालय के साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला द्वारा 21–23 फरवरी 2023 तक चलने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में। (बाएँ से दाएँ) क्रमशः डॉ. मधुलता बारा, डॉ. गिरिजाशंकर गौतम, प्रोफेसर (डॉ.) केशरीलाल वर्मा (कुलपति), प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल (स्वयं मैं) व प्रोफेसर (डॉ.) शैल शर्मा (विभागाध्यक्ष/संकायाध्यक्ष) कुर्सियों पर आसीन हैं।

अखिल भारतीय हिंदी संगोष्ठी में विषय-प्रवर्तन करते हुए

Bharat Vaibhav

Diversity of Expressions & The Cultural Unity of India

Speaker's of the Symposium

DR KISHOR KUMAR TRIPATHY
Member Secretary, AuroBharati, Sri Aurobindo Society Puducherry

SHRI AUDHENDRA PANDEY
Member, Sri Aurobindo Society Lucknow Branch, U.P

SHRI VINOD MARODIA
Founder Member, Sri Aurobindo Society, Dehri-On-Sone Branch, Bihar
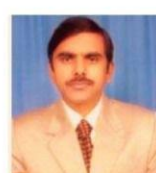
DR RAM SHARMA
Principal, SSB PG College, Raniganj, Ballia, UP

DR. AMARESH PANDEY
Member, SAS, Jabalpur Branch Madhya Pradesh

SRI VINAY KUMAR SINHA
Secretary, Sri Aurobindo Society Gay Branch

PROF. ASHWINI KUMAR SHUKLA
Prof. & Head, DEpt of Hindi, Pt. J L N, College, UP

DR ARUN PRAKASH
Essayist, Philosopher
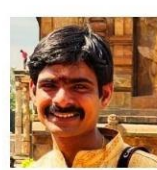
DR. ANKIT AGRAWAL
Academician in Tourism Department of Jiwaji University, Gwalior

'भारत वैभव' के एक कार्यक्रम में सहभागिता

परिशिष्ट-II

समाचारपत्रों में उपस्थिति की एक झलक

'बौर लगी अमराई देती आहट फागुन की...'

कविता पाठ करते डा.रामगोपाल गुप्ता।

बांदा। साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था 'संकल्प क्रम' की गोष्ठी में रचनाकारों ने सामयिक मुद्दों पर काव्य पाठ किया। अज्ञेय और भवानी प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा हुई।

पंडित जेएन महाविद्यालय प्राचार्य डा.नंदलाल शुक्ल के आवास में रविवार को आयोजित गोष्ठी की शुरूआत अतुल शुक्ल ने सरस्वती वंदना से की। डा.अश्वनी कुमार शुक्ल ने अज्ञेय को साहित्य का महान पुरोधा बताया। उन्होंने भवानी प्रसाद मिश्र की 'गीत फरोश' और 'लाओ अपना हाथ' काव्य पंक्तियां प्रस्तुत कीं। जेएन कालेज हिंदी के पूर्व विभागाध्यक्ष डा.रामगोपाल गुप्त ने भवानी प्रसाद मिश्र को सपाट शब्दों में समाज के सामयिक मुद्दों और स्वार्थी कवियों पर व्यंग्य करने वाला लोक चेतना का कवि बताया। प्राचार्य डा.नंदलाल शुक्ल ने 'बौर लगी अमराई देती आहट फागुन की' कविता पढ़ी। डा.बाबूलाल शर्मा 'धीरज' ने 'पर हम तुलसी नहीं बन पाए' पढ़ी। डा.देवलाल मौर्य ने भवानी प्रसाद मिश्र को गांधीवादी परंपरा का श्रेष्ठ संवाहक बताया। डा.उमाकांत अग्निहोत्री ने 'आह से कवि की निकलकर पीर कविता बन गई' पक्तियां प्रस्तुत कीं। मुख्य अतिथि चंद्रशेखर शुक्ल (फतेहपुर) ने फागुन के फाग और विशिष्ट अतिथि डा.चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' ने प्रकृति सौंदर्य और मुक्तक रचनाएं प्रस्तुत कीं। प्रवक्ता डा.राकेश राणा ने सामाजिक विसंगतियों पर कटाक्ष किया। महोबा के शिवनाथ त्रिपाठी 'शंख' ने महंगाई और पर्यावरण प्रदूषण पर काव्य पाठ किया। नीरज पांडेय ने नशा मुक्ति का आह्वान किया। धर्मेंद्र सिंह पटेल, सुधीर खरे 'कमल', रमेशचंद्र दुबे, डा.कृष्णगोपाल गौतम, जवाहर लाल 'जलज', भगवानदीन गुप्त, हारिस जमा ने रचनाएं पढ़ीं। अध्यक्षता प्रो.बीडी मिश्र ने की। बृजराज सिंह परिहार ने आभार जताया।

श्री इंडिया
स्वतंत्रता दि

स्वतंत्रता दिवसः कल और आज

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

हुआ सारस्वत अभिनंदन - सम्मेलन में

Reporter Azra News Published on 23 Dec 2023 9:55 PM

गीता जयंती एवं स्मृति शेष डॉ हरि प्रसाद शुक्ल अकिंचन की 6 वीं पुण्यतिथि पर साहित्य भारती भदबा के तत्वावधान में हवन पूजन के बाद प्रो. डॉ अश्वनी कुमार शुक्ल का स

गीता जयंती पर प्रो. अश्वनी शुक्ल का हुआ सारस्वत अभिनंदन

अश्विनी हिंदी परिषद में सदस्य बने

बांदा। पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय में हिंदी विभाग के वरिष्ठ सहायक प्रो.डा.अश्विनी कुमार शुक्ला को भारतीय हिंदी परिषद कार्यकारिणी में सदस्य चुना गया है। महाविद्यालय प्राचार्य डा.नंदलाल शुक्ल ने खुशी जताते हुए इसे महाविद्यालय के लिए गौरव की बात बताई। परिषद की कार्यकारिणी का चुनाव 15 व 16 अक्तूबर को लखनऊ विश्वविद्यालय में परिषद के 39वें अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन में हुआ।

अमर उजाला, कानपुर 18 अक्टू. 2011

परिशिष्ट-III

प्रोफेसर (डॉ.) अश्विनीकुमार शुक्ल के साथ शोधार्थी चित्रावली

परिशिष्ट-IV

नाम	:	सुनील कुमार
पिता का नाम	:	श्री राजाराम
माता का नाम	:	श्रीमती सूरजकुमारी
जन्म तिथि	:	15/02/1993
स्थायी पता	:	ग्राम : खपटिहा कलाँ, पोस्ट : खपटिहा कलां, थाना : पैलानी, जिला : बाँदा (उत्तर प्रदेश)
अस्थायी पता	:	तुलसी नगर जिला-बाँदा
सम्पर्क सूत्र	:	मोबाइल नं. : 8318211585
ईमेल	:	sunilkumardp1502@gmail.com
जाति	:	गड़रिया (पिछड़ा वर्ग)
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
भाषा	:	हिंदी एवं अँग्रेजी
विवाहित/अविवाहित	:	अविवाहित

शैक्षिक योग्यता :-

परीक्षा का नाम	बोर्ड/वि.वि. का नाम	वर्ष	विषय	प्राप्तांक	प्रतिशत	श्रेणी
हाईस्कूल	यू.पी. बोर्ड, इलाहाबाद	2007	हिंदी,संस्कृत,गणित,विज्ञान,सा. वि.,अँग्रेजी	351/600	58.5	द्वितीय
इंटरमीडिएट	यू.पी. बोर्ड, इलाहाबाद	2010	हिंदी, गणित, अँग्रेजी, भौतिक वि., रसायन वि.	309/500	61.8	प्रथम
बी.ए.	बुंदेलखंड, वि.वि., झाँसी	2013	हिंदी साहित्य, संस्कृत साहित्य',	572/1000	57.2	द्वितीय
एम. ए.	बुंदेलखंड, वि.वि., झाँसी	2015	हिंदी साहित्य	555/900	61.6	प्रथम
बी.एड.	बुंदेलखंड, वि.वि., झाँसी	2021	सभी विषय	972/1200	81.00	प्रथम

डॉ अश्विनीकुमार शुक्ल का शैक्षिक योगदान

हम प्रकाश में दीप्यमान हो दीपों की पात सजाते
हर्षित होते मन अपने तन उमंग में भीगे जाते।

सराबोर हो खुशियों में खुशियाँ हमने भी बाँटी
होती सर्वस्व बाँट देने पर भी रिक्त न होती अपनी थाती।

इस घर में भी फैला होता बिल्कुल वैसा ही उजियाला जैसे अंबर में बिछती है नित तारों की उजली माला।

पर यह सब तब ही होता तम न ऐसे बिखरा होता
जबकि मैं एकल न होकर 'मैं' से इस क्षण 'हम 'होता।

- डॉ अश्विनीकुमार शुक्ल